वर्ष 28, अंक 07 जुलाई-2026 ₹ 3/-

हर घर में हिन्दी, हर मन में हिन्दी ।

SHABARI SALEM

ज्ञानात् परं सुखम्

शबरी

Shabari Siksha Samachar शिक्षा समाचार

तमिलनाडु के सेलम जिले से पिछले 28 वर्षों से बिना किसी अनुदान के निरंतर प्रकाशित होनेवाली, एकमात्र हिन्दी मासिक पत्रिका है ।

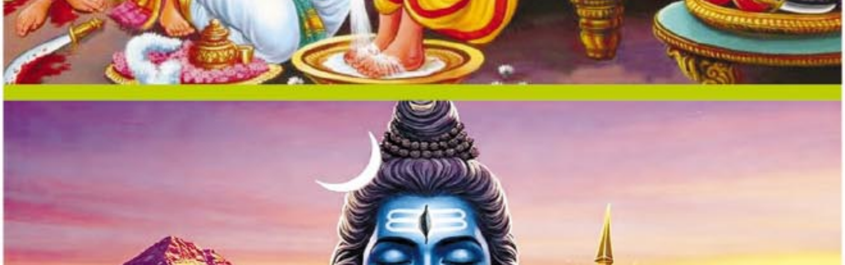

कलिक्कम्बर अमर बने भक्त की सेवा कर ।
पत्नी को भी दंड दिए भक्त महान बनकर ।।

JOIN Vani Vikas

Spoken Hindi Examination

Learn Spoken Hindi in Simplest Way

வாணி விகாஸ் தேர்வுகள்

வாய்மொழி தேர்வு

முயன்றால் முடியாதது எதுவுமில்லை
முடங்கிக் கிடந்தால் எது முடியும் ?
எழுந்து நடந்தால் இமயமும் படியும்
மொழியொன்று கற்றால் வழியொன்று
மொழிகள் பலகற்றால் பல வழியுண்டு
வாருங்கள் சபரியுடன் வழிகாட்டுகிறோம்
வருங்காலம் வளமாகிட வழிகாட்டுகிறோம்
வாருங்கள் வாணிவிகாஸில் சேருங்கள்
ஹிந்தியை இதயபூர்வமாய் பேசிட வாருங்கள்

- **Eight** Graded Levels
- No Previous Hindi Qualifications
- Certificate Issued For Each Level

SHABARI SIKSHA SANSTHAN,
Second Agraharam, Salem - 636 001.
Visit us at https://shabari.in/

पढ़ो मन भरके

शबरी
शिक्षा समाचार

वर्ष 28, अंक 07 | मूल्य ₹ 3/- | जुलाई - 2026

प्रधान संपादक

एम. वेंकटेश्वरन

संयुक्त संपादक

आर. जयकरन

सहायक संपादक

आर.जे. संतोष कुमार

कार्यालय

Shabari Siksha Samachar

R.O.: 37, First Agraharam, Salem - 636 001.
A.O.: Shabari Palace,
193 & 194, Second Agraharam,
Salem - 636 001. Tamil Nadu. India.
Phone : 94431-65414, 94433-65414
e-mail : shabarisamachar@gmail.com

संस्थापक व प्रकाशक

Published & Owned by M. Sridhar, on behalf of SHABARI SIKSHA SAMACHAR, 37, First Agraharam, Salem - 636 001 & Printed by D. SivaKumar at Sivamurthy Press, 35, A.P. Koil Street, Salem - 636001.

समस्त न्यायिक विवादों के लिए क्षेत्राधिकार सेलम होगा । शबरी शिक्षा समाचार में छपी किसी भी सामग्री से संबंधित पूछताछ व किसी भी प्रकार की कार्यवाही प्रकाशन तिथि से एक माह के अंदर की जा सकती है, बाद में किसी भी पूछताछ पर जवाब हेतु बाध्य नहीं । सभी सामग्री से संपादक सम्मत या सहमत हो यह ज़रूरी नहीं ।

SHABARI BOOK SALES

Whatsapp : **9443165414**

Office Phone : **9842765414**

Office Phone : **9443365414**

VANI VIKAS NUMBER

0427-4265414

0427-4552100

Office Hrs : 10.00 AM to 5.00 PM

इस अंक में

संपादक की कलम से 5
अनमोल वचन 6
राधे मन में बसो मेरे 7
माँ जैसी ? 8
''आपने पाया ?'' – एक छोटा . 10
अपमान के आँसू 12
निर्मलता 13
बालश्रम् 14
जीवन में उमंग जरूरी है.......... 15
देख सुहानी रात 16
प्रदूषण 17
आँच 17
इस धरा का इस धरा पर सब धरा 18
शब्द 18
माँ की गोद 19
ग़ज़ल 20
मनिहारन – मत्तगयंद सवैया...... 21
जिंदगानी 21
रहने दो 22
खामोशी ही इश्क की महकती हुई 23
ईश्वर का सानिध्य 24
महँगाई की आग...!............ 24
राजनीति और रण 25
प्रसवोत्सव 25
महान संत शिव भक्त–तमिल नायनमार 28
बचपन 30
पेड़ लगाएँ 31
बदल दिए 32
कमाल करते बाबा 33
माया.............................. 33
पानी बरसे 34
उत्तर देगा केवल काल 34
अपनों से हारे 35
घनाक्षरी 35
मातृशक्ति 36
मित्र वही है ।। 36
माँ जीवन के हर पल में.......... 37
बदलेगा 37
संस्कार से चरित्र श्रेष्ठ बनते हैं 38
गिल्लू खाते आम रसीला 38
हे ! कोकिल सुन 39
चुनर हिन्दुस्तानी । 39
पिंजरे में बंद परिंदे 40
अनुगमन.......................... 40
बरखा की तुम पहिली फुहार हो .. 41
दर्द 41
योग 42
पाठकों के पत्र 42
नवांकुर 44
पठितम्, अभिरुचितम्, अनूदितम् . 45
अनुष्टुप–छंदा: 45
தமிழமுது 46
அருள் உலா 47

வாணிவிகாஸ் வாய்மொழித் தேர்வு விவரம்

தேர்வு நடைபெறும் மாதம்	தேர்வு நடைபெறும் தேதி	தேர்வு விண்ணப்பங்கள் வழங்கும் நாள் கடைசி தேதி	₹10/- தாமதக் கட்டணத்துடன் செலுத்த
ஜூலை-2026	19-07-2026	01-04-2026 to 31-05-2026	05-06-2026
அக்டோபர்-2026	25-10-2026	01-07-2026 to 31-08-2026	05-09-2026
ஜனவரி-2027	24-01-2027	01-10-2026 to 30-11-2026	05-12-2026
ஏப்ரல்-2027	18-04-2027	01-01-2027 to 28-02-2027	05-03-2027

வாணி விகாஸ் தேர்வுகளுக்குரிய விண்ணப்பங்கள் ஆன்லைன் (ONLINE) வாயிலாக மட்டுமே (https://shabari.in) ஏற்றுக் கொள்ளப்படும்.

★ **D.D.** ***மற்றும் மணியார்டர் ஏற்றுக் கொள்ளப்படமாட்டாது.***

our web portal @ **https://shabari.in**

✍ संपादक की कलम से ...

प्रिय पाठक बन्धुवर, सस्नेह वन्दे ।

दुनिया के प्राचीनतम देशों में भारत की संस्कृति सबसे अलग ही नहीं, सबसे महान और विशिष्ट है । माता-पिता, गुरु तथा देव - इन चारों में सबसे प्रधान माता मानी जाती है । जन्मभूमि को नारी के रूप में हमारी संस्कृति देखती है और वही सिखाती है । नारी शक्ति को महान शक्ति माननेवाली हमारी संस्कृति ने शुरू से ही नारी को महानतम स्थान पर रखा है ।

''यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते, रमन्ते तत्र देवताः'' आप सब इसे सुने होंगे और इसका हिन्दी भावार्थ है - जहाँ नारी का सम्मान होता है, वहाँ देवत्व और समृद्धि का वास होता है । नारी जो माँ है, बहन है, पत्नी है, पुत्री है, सखी है और सब कुछ है - उसके बिना जीवन में कुछ भी नहीं है । नारी ही इस दुनिया में प्यार, परिवार, समाज आदि का प्रधान कारण बनती है । नारी का आदर करना, उसके भावों को समझना और उसे सुखी रखना हर पुरुष का कर्तव्य है ।

हाल ही के अन्वेषणों के अनुसार माना जाता है कि संतानों की बुद्धिमत्ता पिता पर नहीं, बल्कि पूर्ण रूप से माता पर आधारित है । सालों से लोग मानते थे कि पिता के अनुसार संतान की भी बुद्धिमत्ता रहेगी । लेकिन यह बात सच नहीं । माता के अनुसार ही संतान की बुद्धिमत्ता और अन्य गुण बच्चों में पाए जाते हैं ।

जिस घर में माता पढ़ी-लिखी है और सर्वगुण संपन्न है, उस घर में सारा सुख अपने आप भर जाएगा । संतानों में सद्‌गुणों के प्रति रुचि होने के साथ तेज बुद्धि भी पनपेगी । इसलिए हर बेटी को पढ़ाना और हर बहू को पूर्ण स्वतंत्रता देने के साथ-साथ उसे खुश रखना हर एक का कर्तव्य बनता है, जिससे सबका भविष्य उज्ज्वल रहेगा ।

बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ इस नारे को संपूर्ण रूप से अपनाने के साथ-साथ ''बहू का सम्मान करो, परिवार में सुख शांति भरो'' इस नारे को भी हर घर में पहुँचाना नारी का नहीं, हर नर का महत्वपूर्ण कर्तव्य है ।

जय हिन्द ! जय हिन्दी !!

अनमोल वचन

प्यार (प्रेमिका–प्रेमी)

तमिल संत महान तिरुवल्लुवर के अनुसार –

जिस तरीके से प्रेमिका प्रेमी से प्यार करती हैं उसी तरह प्यार करनेवाले प्रेमी को पाने पर प्रेमिका की जिंदगी ऐसे हो जाती है कि जिस प्रकार बीज के बिना पूरे के पूरे (बिना किसी प्रकार के कमी) के मीठा फल मिला हो ।

जिस प्रकार इस दुनिया में जीनेवाले जीवों को उचित समय पर पानी बरसा कर मेघ मदद करता है उसी प्रकार अपने विरह में तड़पनेवाली प्रेमिका पर प्रेमी प्यार सुख बरसता है ।

अपने से प्यार किये जानेवाले प्रेमी से उतना ही प्यार पानेवाली प्रेमिका को यह विश्वास सदा रहेगा कि विरह के बाद मिलन जरूर होगा, हम मिलकर जियेंगे ।

अपने प्रेमी से प्यार नहीं किए जानेवाली नारी चाहे जितनी भी सुगुणा हो उसके पूर्व जन्म सुफल बिलकुल शून्य माना जाएगा ।

हम जिसे पूर्ण रूप से प्यार करते हैं वह हमारे प्यार को समझ नहीं पाए तो उस प्रेमी से हमें क्या सुख मिलेगा ?

एक तरफ का प्यार सदा दुख ही देता है लेकिन दोनों तरफ बराबर मात्रा का प्यार होगा तो वही सर्वानंद है ।

प्रेमी–प्रेमिका दोनों में बराबर भाव जगाने वाला कामदेव अगर प्रेमिका को सताएगा तो उसका रंग पीला पड़ जाता है और उससे वह बहुत दुख भोगती है । इसे कामदेव क्यों नहीं देखते ?

अपने प्रेमी से कभी अलविदा नहीं कहूँगा ऐसा वादा सुने बिना उसके विरह को सहते हुए जीनेवाली नारियों से पत्थर दिलवाले और कोई इस दुनिया में नहीं हो सकते ।

मैं जिस प्रेमी को पूरे मन से चाहती हूँ वे कभी मेरे पास नहीं आएँगे और प्यार नहीं दिखाएँगे । फिर भी उनके यश या नाम को किसी से सुनना मेरे कानों के लिए मधुरतम लगता है ।

हे मेरा मन ! जिसमें तेरे प्रति ज़रा–सा भी प्यार नहीं है उसके पास जाकर अपना दुख बता रही हो । इससे अच्छा है समुद्र के पानी को वहाँ से कहीं दूर फेंकने का प्रयास करना । उसे करो ।

राधे मन में बसो मेरे

– साहित्य रत्न श्री. जेमि,
कोवै, तमिलनाडु

हर पल हर दिन हर रात नाम तेरा ही अपनाते गुण गाते कृष्ण
हर रूप से राधे तेरे प्यार में खो जाते बाकी सब कुछ भूल जाते कृष्ण
मधुर मधुर हो हर रूप से मधुरतम हो तुम राधे खो गए थे कृष्ण
आपको देखकर आपको अपने पास पाकर खो जाते श्री कृष्ण
मन भाती कोकिलाएँ भी हार जातीं आपकी हँसी सबको हरा देती
आपके सामने कृष्ण कन्हैया भी अपनी बाँसुरी तक भूल जाते
जगन्नाथ जो सबको संभालते खुद को संभल ना पाते
राधे, हे माँ ! आपके प्यार के सामने अपना सब कुछ वे भूल जाते ।

पीछा नहीं छोड़ती थी तब गोपिकाएँ सब कृष्ण के सारी
राधा आपके सामने कृष्ण भी बन जाते भक्त आपके बन जाते पूरे
दुनिया की सारी खुशी नहीं तीन लोकों की खुशी मिल जाती
दामोदर कृष्ण को राधा की छवि अत्यंत प्रसन्न चित्त बना देती
कृष्ण की नैनों को सदा सुख देती राधा जी आपकी वह छवि
माखन से ज्यादा मन श्री कृष्ण का सदा चाहता राधा का साथ
जगन्नाथ जो सबको संभालते खुद को संभल ना पाते
राधे, हे माँ ! आपके प्यार के सामने अपना सब कुछ वे भूल जाते ।

राधे राधे नाम जो भी जग में ले पाते कृष्ण का प्यार अपनाते
राधे राधे नाम जो मन में भर लेते जीवन में सुख सारा वे भर पाते
प्यार का नाम वही है राधा प्यार का अर्थ वही है राधा
प्यार का सार समझने आई कृष्ण का मन मोहने आई प्यारी राधा
चित्र ही क्यों ना हो चित्त भर देता है राधा कृष्ण की वह जोड़ी
दिल हर रोज चाहता है वर यह माँगता है दिख जावे वह जोड़ी
राधे राधे राधे राधे राधे मन में मेरे बस जाओ अब आओ कृष्ण सहित
महान प्यार के रूप तुम ही हो राधे मन में बस जाओ अब कृष्ण सहित ।

माँ जैसी ?

– विद्या सागर आर.जे. संतोष कुमार,
कोवै, तमिलनाडु

मोहित पहले से बोल रहा था कि मेरी शादी कृष्ण के मंदिर में करा दीजिए। मनमोहन के सामने शादी करके मैं अपनी नई जिन्दगी की शुरुआत करना चाहता हूँ। मोहित का तो यही विचार था कि लाखों में खर्च करके शादी करने से अच्छा है कि आवश्यक मात्रा में खर्च करके, जो बचाया जाता है उसे गरीबों और अनाथों को भरपेट खाना खिलाने में ही अधिक सुख मिलता है।

अपने बेटे को एक अच्छे मानव के रूप में देखना हर किसी पिता के लिए आनंदमय बात ठहरती है। लेकिन उसकी हर बात को मानना भी एक पितृ हृदय नहीं जानता है। अपने बेटे की शादी बड़ी धूमधाम से करने के लिए वे तैयार हुए। शादी के लिए जो भी खरीदना है उसे तो रुपया कर देगा। सबको यह पता भी है कि बाप बड़ा ना भैया, सबसे बड़ा रुपैया। अपने बेटे की शादी के योग्य रुपए पहले से अलग रखे हुए थे। अब सबसे पहले एक योग्य युवती चुनना चाहिए।

रिश्तेदारों को ही नहीं, जाने-माने सब मित्र बंधुओं को भी यह बात फैलाया गया कि मोहित के लिए एक अच्छी लड़की ढूँढ रहे हैं। लड़की मिलते ही उसकी शादी तय की जाएगी। रिश्तेदार घर आने-जाने लगे। बुआ ने मोहित से पूछा – बेटा यह तो बताओ कि तुझे कैसी लड़की चाहिए ? गाँव की लड़की या शहर की आदतेंवाली ? मोहित ने मुस्कुराते हुए कहा – मुझे तो मेरी माताजी जैसी एक लड़की चाहिए। मेरा बेटा अभी यही बोलता है उसको भी अपनी माता के जैसी ही एक लड़की चाहिए। कोई बात नहीं बेटा, ऐसे ही एक लड़की ढूँढ लेंगे, हँसती हुई कहने लगी बुआ।

दिन कटने लगे। दूर-दूर से मोहित के लिए बहुत सारे रिश्ते आने लगे। अपने लिए उचित लड़की चुनने का कार्य भार उसने अपने माताजी को दिया था। अपने बेटे के लिए उचित लड़की की खोज में माता ने अपने ही शहर की मृदुला को चुना। जमाना तो बहुत बदल गया है। उस जमाने में पिताजी जिस किसी को भी बोले उसी से बिना किसी प्रश्न के शादी कर लेते थे। आजकल तो लड़के-लड़की घंटों बैठकर बात करते हैं उसके बाद अपनी जोड़ी चुनते हैं। मोहित को मृदुला अच्छी लगी। मन ही मन मान भी लिया कि यह तो मेरी माता के जैसी है। मृदुला को भी मोहित अच्छा लगा। बातें बढ़ने लगी और शादी धूमधाम से हो गई।

महीने बाद बुआ घर आई थीं । बातों–बातों में वह कहने लगी – मोहित के लिए तो बहुत अच्छी लड़की मिल गई । अभी प्रजित की बारी है । उसके लिए भी लड़की ढूँढना पड़ेगा । क्या आप लोगों ने उससे पूछ लिया कि उसे कैसी लड़की चाहिए ? बुआ के यह पूछते ही मोहित ने कहा उसे भी मेरी माता के जैसी एक अच्छी लड़की चाहिए । सही है ना मृदुला ? मृदुला बोली – जैसी आपकी मर्जी ।

अपनी पत्नी को छेड़ते हुए मोहित ने कहा – हर लड़का यही चाहता है कि उसकी पत्नी अपनी माता के जैसी हो । लेकिन कभी भी कोई भी लड़की यह नहीं बोलेगी कि अपने भाई के लिए लड़की अपनी माता के ही जैसी हो । है ना मृदुला ? यह सुनते ही मृदुला की आँखों से आँसू टपकने लगे । मोहित बहुत ही डर गया था क्योंकि पहली बार उसकी आँखों से आँसू निकल रहे थे । वह सिसक रही थी । सब उसके पास आए ।

आँसू रोकते हुए मृदुला बोली – सही बात है कभी भी कोई भी लड़की अपनी माता के जैसी लड़की चाहिए ऐसे कह ही नहीं सकती । हर माता अपने बेटे के सामने पिघल जाती हैं उसकी खुशी के लिए कुछ भी करने के लिए तैयार रहती हैं । लड़का अपने ही स्वार्थ के लिए प्यार दिखाते हुए, अपना काम निभा लेता है । करवा लेता है । कोई भी लड़का अपनी माता को पूर्ण रूप से समझ नहीं पाता । लेकिन लड़की ऐसी नहीं है । हर लड़की जानती है कि अपनी माता परिवार के लिए कितना त्याग करती है । कितना दुख सहती है । सारे दुख अपने में छुपा कर प्रसन्नचित्त कैसे वह दिखाई देती है । माँ और बेटी का रिश्ता सिर्फ वही समझ सकती हैं । लड़की अपनी माता के बारे में सारी सच्चाइयाँ जानती है । वह कभी भी अपनी बहु या भाभी को दुख देना नहीं चाहती है ।

सबके सामने अपनी पत्नी को गले लगाते हुए मोहित ने वादा किया – मेरा बेटा ही नहीं मेरी बेटी भी कहेगी कि माता के जैसी ही एक लड़की चाहिए । मेरे साथ मेरे घरवाले भी तुझे ऐसे रख लेंगे कि कभी किसी वक्त तुझे दुख होने या रोने का मौका ही ना मिले । अपने बेटे के पीठ सहलाते हुए मोहित की माता ने मृदुल को गले लगा लिया । सुनो बेटी, मेरा बेटा सही बात कह रहा है । इस घर में कभी तुझे कोई दुख भोगना पड़ेगा । मृदुला का रोना रुक गया । वह मोहित की माता को गले लगाते हुए आँसू पोंछकर मुस्कुराने लगी ।

''आपने पाया ?''
- एक छोटा प्रश्न, बड़ी सीख

– श्री. विजय मान,
मेरठ, उ.प्र.

रामेश्वरम और सप्त ज्योतिर्लिंग यात्रा के दौरान जब हमारा दल नासिक पहुँचा, तब दिनभर के दर्शन और भ्रमण के बाद सभी यात्रियों को मार्ग के लिए एक-एक भोजन पैकेट दिया गया। मेरे हाथ में भी भोजन का एक पैकेट था। उस समय मन में विचार आया कि इसे किसी जरूरतमंद व्यक्ति को दे दिया जाए।

मैं भोजन का पैकेट लेकर सड़क की ओर निकल पड़ा। आसपास नज़र दौड़ाई तो कुछ दूरी पर एक वृद्ध मजदूर दिखाई दिए। उम्र लगभग साठ वर्ष रही होगी। चेहरे पर समय की मार साफ झलक रही थी, कपड़े साधारण थे और कदमों में दिनभर की मेहनत की थकान दिखाई दे रही थी।

मैं उनके पास गया और विनम्रता से कहा, ''बाबा, भोजन का पैकेट है, यदि चाहें तो ले लीजिए।''

मुझे लगा कि शायद वे तुरंत पैकेट ले लेंगे। आखिर भूख और गरीबी के सामने कौन इंकार करता है ? लेकिन उन्होंने दोनों हाथ जोड़कर जो उत्तर दिया, उसने मेरे मन को भीतर तक झकझोर दिया।

उन्होंने मुस्कुराते हुए पूछा –

''आपने पाया ?''

बस दो शब्द।

मैं कुछ क्षण के लिए मौन रह गया।

जिस व्यक्ति के चेहरे पर अभाव की रेखाएँ साफ दिखाई दे रही थीं, जो शायद दिनभर की मेहनत के बाद भोजन की प्रतीक्षा में था, वह स्वयं भोजन लेने से पहले मेरी चिंता कर रहा था। वह यह जानना चाहता था कि कहीं मैं अपना हिस्सा तो नहीं दे रहा, कहीं मैं स्वयं भूखा तो नहीं रह जाऊँगा।

उस क्षण मुझे लगा कि गरीबी केवल जेब की होती है, संस्कारों की नहीं।

आज के समय में जब अधिकांश लोग अपने स्वार्थ और लाभ के बारे में पहले सोचते हैं, जब छीना-झपटी और आगे निकलने की होड़ लगी हुई है, तब उस मजदूर के शब्दों ने जीवन का एक गहरा सत्य सिखा दिया । जिसने शायद जीवन में अनेक कठिनाइयाँ देखी थीं, जिसके पास धन नहीं था, लेकिन उसके पास संवेदनाओं और संस्कारों की ऐसी संपत्ति थी जो बड़े-बड़े धनवानों के पास भी नहीं होती ।

मैंने उनसे कहा, ''हाँ बाबा, मैंने भोजन कर लिया है । यह आपके लिए है ।''

तब उन्होंने खुशी के साथ वह पैकेट स्वीकार किया और मुझे आशीर्वाद दिया । लेकिन सच कहूँ तो उस दिन भोजन का पैकेट मैंने उन्हें दिया था, जबकि सीख और आशीर्वाद उन्होंने मुझे दिया ।

नासिक की उस सड़क पर हुई यह छोटी-सी मुलाकात मेरे जीवन की बड़ी पूँजी बन गई ।

आज भी जब उस घटना को याद करता हूँ तो मन में वही शब्द गूँज उठते हैं -

''आपने पाया ?''

और तब महसूस होता है कि मानवता का वास्तविक अर्थ यही है - पहले स्वयं से अधिक दूसरे की चिंता करना ।

उस वृद्ध मजदूर ने मुझे सिखाया कि जीवन में जब भी किसी की सहायता करें, तब केवल देने का भाव ही न हो, बल्कि यह भी याद रखें कि सामनेवाला व्यक्ति भी आत्मसम्मान, संवेदना और संस्कारों से भरपूर हो सकता है ।

नासिक की यात्रा में मैंने मंदिरों के दर्शन तो किए ही, लेकिन उस दिन सड़क पर मुझे मानवता का भी साक्षात् दर्शन हुआ । और वह दर्शन किसी तीर्थ से कम नहीं था ।

सीख :

''सच्चे संस्कार व्यक्ति की संपत्ति नहीं, उसकी पहचान होते हैं । धन की कमी इंसान को गरीब बना सकती है, लेकिन संवेदनाओं की समृद्धि उसे महान बना देती है ।''

अपमान के आँसू

– श्री. रीता सिंह,
बेंगलुरु, कर्नाटक

मेरी शादी में मेरे पिता जी ने अपनी हैसियत से ज्यादा दहेज दिया था लेकिन फिर भी मेरे ससुरालवाले खुश नहीं थे । उस समय मोबाइल फोन नहीं था । मेरे माता-पिता को मेरी याद आई कि पता नहीं मै किस हाल में हूँ । ये सोच कर मेरे पिता एक दिन मुझसे मिलने के लिए मेरी ससुराल आ गए । मेरी ससुराल से पहले मेरे ससुर जी की दुकान पड़ती थी । हर आने-जानेवाले को उस दुकान में ससुर से मिल कर ही घर आना होता था । और ससुराल में मेरा कमरा दूसरी मंजिल पर था । जैसे ही मेरे पिता ऊपर आए, मैं खुशी से दौड़ के उनके गले लग गई । दोपहर का समय था । मैंने अपने पिता जी से कहा कि पहले चाय बना दूँ या खाएँगे । पिता जी बोले कि चाय और भोजन वो मेरे ससुर जी की दुकान पर ही कर के आ रहा हूँ । मैं आश्चर्य चकित थी कि खाना और चाय दुकान पर क्यों करवाया । लेकिन मैं कुछ नहीं बोली । मैं अपने पिता जी से जी भर के बातें भी नहीं कर पाई । क्यों कि मेरे कमरे की सारी आवाज नीचे मेरे ससुर के कमरे में जाती थी । और ससुराल में एक दुखी बेटी अपने पिता जी से अपना दुख ही कह के अपना मन हल्का करना चाहती है । थोड़ी देर घर में सबके हालचाल पूछने के बाद मेरे पिता जी बोले कि बेटा तुम्हें कोई दिक्कत तो नहीं है न ? मेरे पिता जी की वो बात पूछने के अंदाज से मुझे लगा कि जरूर मेरे ससुर ने कुछ कहा होगा । लेकिन मेरे पिता को दुख न हो इसलिए मैने कह दिया कि नहीं, मैं यहाँ बहुत खुश हूँ । मुझे कोई दिक्कत नहीं है । और फिर मेरे पिता जी आँखों में आँसू भरे मेरे सर पर हाथ रख के वहाँ से चले गए । काफी दिनों बाद मुझे मेरी बहन से पता चला कि पिता जी काफी दिन से मेरे लिए परेशान थे । और सुबह 5 बजे वाली रेलगाड़ी से मुरादाबाद से दिल्ली आकर मुझसे मिलने आए थे फिर मुझसे मिल के वो वापस मुरादाबाद चले गए थे । वो सारा दिन भूखे ही रहे । उन्होंने घर जा कर भी खाना नहीं खाया था । मेरी बहन ने बताया कि जब मेरे पिता जी मेरे ससुर की दुकान पर बैठे थे तो ससुर जी ने उनसे कहा कि खाना मंगवा दूँ आपके लिए यहाँ पर । इस पर मेरे पिता जी ने कहा कि नहीं बेटी से मिलने आए हैं पहले बेटी से मिल लें । तब मेरे ससुर ने कहा कि अरे खाना तो हम आते-जाते राहगीरो को भी खिला देते हैं । मेरे पिता जी ने उनसे कहा कि ठीक है बेटी से मिल कर फिर यहाँ खाना खा लेंगे ।

तब मेरी समझ में आया कि उस दिन मेरे पिता जी की आँख में आँसू बेटी से दूर जाने के नहीं बल्कि बेटी के पिता होने के अपमान के आँसू थे ।

निर्मलता

– श्री. प्रिया देवांगन 'प्रियू',
गरियाबंद, छत्तीसगढ़

पहले हमें लोग कितना मानते थे जीजी ! घाट पर आकर प्रतिदिन दीप जलाते, स्नान कर के अपने शरीर को शुद्ध करते; साथ ही साथ किनारे बैठ कर ठंडी-ठंडी पुरवाई का आनंद भी लेते थे । कितने अच्छे दिन थे...पैरी की आँखें भर आईं ।

हाँ ! पैरी बहन दुख-सुख बाँटते, अब न पेड़ों की छाया न कोई इंसान । कूड़ादान बना रखा है हमें ।

आप कैसी हैं जीजी...दोनों बहनों ने बड़ी जीजी से पूछने की हिम्मत जुटाई ।

हाँ बहनों ! मेरा भी यही हाल है, अब मेरे जल में स्नान करने लोग कभी-कभी ही आते हैं और उसके बाद भी लोग अपने-अपने घरों में या पास लगे नलकूपों से स्वयं को पुन: पवित्र करते हैं । इंसानों की सुविधाएँ हमें और भी पीछे छोड़ती नजर आ रही हैं । चारों तरफ सूखा ही सूखा है । इतना कह कर बड़ी जीजी का गला भर आया । ख़ैर छोड़ो... लोग जैसे भी रहें लेकिन हमें अपनी अच्छाई नहीं छोड़नी चाहिए ।

हमारा जल आज भी पवित्र है और कल भी रहेगा; उनके गंदगी फैलाने से हम गंदे नहीं हो जाएँगे, अभी भी लाखों जीव हमारे अंदर रह कर जीवन यापन कर रहे हैं, हमें उन पर भी ध्यान देना चाहिए न ! क्या हुआ शहरों में गंदगी है तो...आगे जंगल-झरनों में तो हमारा जल पवित्र है ही । आज भी अमृत है । सदैव अच्छी सोच रखो बहनों । हाँ ! जीजी लेकिन हमारी इतनी पतली धार में इन बेचारे नन्हे जीवों का जीवन खतरे में है इनका क्या करें ? इतना बोलते ही जोरों की बारिश होने लगी । भगवान ने हमारी व्यथा सुन ली जीजी ! फिर क्या.... महानदी, पैरी और सोंढूर तीनों बहनों की पतली धारा, मोटी धारा में बदल कर एक-दूसरे में समाहित होकर मुस्कुराते हुए मंजिल की तरफ प्रवाहित होने लगीं ।

बालश्रम

–श्री. मोनिका डागा 'आनंद',
चेन्नै, तमिलनाडु

जिन नन्हें हाथों में होनी चाहिए क़िताबें अक्सर,
उन कंधों पर डालते हो बाल मजदूरी का कहर,
गरीब बच्चों को दुकानों घरों में काम पर रखकर,
क्यों भर देते हो मासूम जिंदगी में क्रूरता का जहर ।

तोड़ रही उस बचपन को न जाने कितनी मजबूरियाँ,
तुमने श्रमिक बना छीन ली उस जीवन से खुबियाँ,
जहाँ गूँजनी चाहिए हँसी विरान वो ''आनंद'' गलियाँ,
परिवार पैसा पोषण हर तरफ केवल खड़ी चुनौतियाँ ।

मजबूरी का फायदा उठा कमाना चाहते तुम मुनाफा,
ईश ने लिख दिया तुम्हारे नाम दुःखों का लिफाफा,
बालश्रम अपराध ही नहीं बालहत्या कष्ट चौतरफ़ा,
भोले मन की आह से हर सुख हो जाता रफा-दफा ।

जिंदगी न जाने कब करदे अपना इंसाफ पलटवार,
मत करो लोभ में पड़ बाल बचपन पर ये अत्याचार,
जब जीवन इंसानियत को छोड़ करता है व्यापार,
कड़क हो जाता न चाहते हुए भी प्रेममय व्यहवार ।

मुहिम जगा मुस्कान लाओं बालश्रम का हो विरोध,
गरीब बालकों की शिक्षा में सहयोग करें हैं अनुरोध,
उज्जवल भविष्य रहे देश का ताकतवर निर्विरोध,
गरीब बच्चों की शिक्षा स्वास्थ्य पर न आएँ अवरोध ।

जीवन में उमंग जरूरी है

– श्री. सूबेदार कृष्णदेव प्रसाद सिंह,
मधुबनी, बिहार

उमंग नहीं तो, जिंदगी नीरस लगती है,
मानव जीवन में, उमंग बहुत जरूरी है ।
उमंग से दुःख दर्द दूर भाग जाते सारे,
जग में, नीरस उदास जिंदगी अधूरी है ।
जीवन में उमंग...

उमंग संग होता, बसंत बहार का आना,
इसी उद्देश्य से सावन आता है सुहाना ।
उमंग से दूर प्रकृति भी नहीं रह सकती,
अगर उमंग नहीं है, तो कोई मजबूरी है ।
जीवन में उमंग...

उमंग है जीवन का, सबसे सुंदर उपहार,
इसके बिना हर मनुष्य लगता है बीमार ।
कटी पतंग सी होती बिन उमंग जिंदगी,
सुखी जीवन में इससे संभव नहीं दूरी है ।
जीवन में उमंग...

जीवन में उमंग भरते, सारे पर्व त्योहार,
तन मन में होता नई चेतना का संचार ।
उमंग से मिलती है जीवन में कामयाबी,
जीवन के पहिए घूमते, उमंग ही धुरी है ।
जीवन में उमंग...

देख सुहानी रात

– श्री. रमेश मनोहरा,
जावरा, म.प्र.

विद्या जिसके पास रहे, उसको तू संभाल
जीवन फिर तेरा बने, सदैव ही खुशहाल

जिन लोगों के पास है, नोटों की बरसात
उनकी रहती है सदा, देख सुहानी रात

पैसों में हरदम रहे, रमेश जिसकी जान
खुद को समझे आज वे, देखो बड़ा महान

जो देता है आदमी, लोगों को उपहार
यह संसार उसका करें, हरदम देखो प्यार

जग में रहकर जो करें, अच्छे-अच्छे काम
उसका ही चलता सदा, जग में देखो नाम

पैसों को ही मानता, जो अपना आधार
पूजे उसको ही यहाँ, देखो इस संसार

बिगड़े काम की करता, रमेश यदि शुरुआत
उससे आप करें सदा, मीठी-मीठी बात

मन में रखें आप सदा, अच्छे-अच्छे भाव
उस मानव से ही रखें, बहुत अच्छा लगाव

रहता है ग़रीब सदा, आधा भूखा पेट
शोषण के वे हाथ, ही लेते सभी समेट

अनजाने होती सदा, मानव से ही भूल
फिर चुभाती जीवन भर, उसको देखो शूल

कविता

प्रदूषण

– डॉ. राजेश कुमार शर्मा 'पुरोहित',

झालावाड़, राजस्थान

बढ़ता प्रदूषण दुनिया में, देखो तबाही लाया है ।
धूल धुएँ के उड़े गुबार, दिन में अंधेरा छाया है ।।
बढ़ता ध्वनि प्रदूषण देखो, हॉर्न डी जे बज रहे ।
बढ़ रहे वाहन सड़कों पर, लाउडस्पीकर बज रहे ।।
प्लास्टिक का घर-घर में देखो, उपयोग नित बढ़ रहा ।
फेंक रहे सड़कों पर प्लास्टिक, प्रदूषण को बढ़ा रहा ।।
शुद्ध जल पीने को मिलता, नहीं सहज में अब यहाँ ।
जल स्रोतों को बदल दिया, कचरा पात्र जबसे यहाँ ।।
पानी की बर्बादी होती, सरकारी नल भी बह रहे ।
टूटी-फूटी पाइप लाइन, सड़कों पर पानी बहा रहे ।।
पेड़ काट रहे लोग देखो, खेतों में मकान बना रहे ।
छाया ढूँढे गर्मी में, पीपल, नीम और वट खोज रहे ।।
पेड़ लगाओ घर के आगे, हरियाली का काम करो ।
पर्यावरण बचाओ भाई, नेक काम यह एक करो ।।

आँच

– श्री. राजेन्द्र परदेसी,

लखनऊ, उ.प्र.

'देख माँ, सामने की कोठी से धुँआ निकल रहा है,
'तो क्या हुआ'
'तू चूल्हा नही जलायेगी क्या'
'नहीं बेटी'
'क्यों'
'झोपड़ी में आग दोनों समय नहीं जलाई जाती,
फूस की होती है न, अधिक आँच सह नहीं पायेगी',

इस धरा का इस धरा पर सब धरा रह जायेगा ।

– डॉ. राजेश तिवारी 'मक्खन',
झाँसी, उ.प्र.

इस धरा का इस धरा पर सब धरा रह जायेगा ।
काम ऐसे कर तू वन्दे यश जगत रह जायेगा ।।
अर्थ आये भी भला तुम धर्म मय अर्जन करो ।
नीति की करना कमाई अंश कुछ अर्पन करो ।।
पाप का पैसा तेरा सब, पाप ही करवाएगा ।।...1
जिनकी खातिर कर्म निदिंत तू हमेशा कर रहा ।
कनक सी काया कलश में पाप को क्यों भर रहा ।।
पाप का तेरा महल यह, देखते ढ़ह जायेगा ।।...2
पाप से यदि की कमाई काम न कुछ आयेगी ।
कर्म यदि सुन्दर किये तो नाम दुनिया गायेगी ।।
कर्म जो शुभ या अशुभ हो भोगना पड़ जायेगा ।।...3
सोच लो जाना कहा है स्वर्ग में या नरक में ।
ईश कण-कण में समाया सोच तेरे फरक में ।।
त्याग तप सम योग जीवन हो सफल सब जायेगा ।।...4

शब्द

– श्री. अनंग पाल सिंह भदौरिया 'अनंग',
ग्वालियर, म.प्र.

शब्द जानकर सत्य को, जान न सकते मित्र ।
शब्द जानकर प्रेम का, गढ़ा न जाय चरित्र ।।
गढ़ा न जाय चरित्र, शब्द में भी परमेश्वर ।
को सकते पहचान, शब्द में भी है ईश्वर ।।
कह 'अनंग' करजोरि, जानकर और मानकर ।
मिलता है आभास, न मिलता शब्द जानकर ।।

माँ की गोद

– डॉ. अनिल कुमार भी
इराज, तालीकोटा, कर्नाटक

पानी की लहरों पर सोई है एक कहानी,
थकी–सी माँ और उसकी नन्हीं–सी निशानी ।
आँखें बंद, मगर आँचल अब भी फैला है,
बाहों में माँ बच्चे को कसकर जकडी है ।
शोर कहीं दूर है, यहाँ गहरा सन्नाटा छाया है
ममता ने हर दर्द को चुपचाप ही सहा है ।
लहरें पूछती हैं कि यहाँ ये खामोशी क्यों है,
क्यों हर साँस में बस अधूरी–सी ही दुआ है ।
नन्हा–सा बालक माँ से लिपटा हुआ सोया है,
जैसे डूबते नय्या से खुद को बचा रहा हो ।
माँ की ममता भरी गोद में हर डर सो जाता है,
पर आज ये सन्नाटा दुनिया के दिल को रुलाता है ।
कुदरत भी जैसे रुक रुककर हादसे को देख रही है,
इस ममता की सीमातीत प्यार को परख रही है ।
जो शब्दों में ना समापाये, वो एहसास में समाये हैं,
माँ और बेटे की अभिन्न अनंत प्यार है ।

दिमाग बने ताजा , अंक पाने में मजा

Gandhiji's Q & A (Based on D.B.H.P. Sabha, Chennai)

Parichaya (Based on D.B.H.P. Sabha, Trichy)
Prathamic
Madhyama
Rashtrabhasha
Praveshika
Visharad Poorvardh
Visharad Uttarardh
Praveen Poorvardh
Praveen Uttarardh

~~~~~ Available at ~~~~~

Shabari Book House, Salem.

Whatsapp : 94431-65414, Phone : 94433-65414, 98427-65414

You may purchase via **https://books.shabari.org**
~~~~~

ग़ज़ल

– श्री. बिमल तिवारी 'आत्मबोध',
देवरिया, उ.प्र.

मंदिरों से भक्त के सब दान चोरी हो गई
सब छिछोरे लोग यहाँ प्रेम किशोरी हो गई

भूख से बच्चे बिलखते रह गए चौपाल में,
मंच पर प्रवचन की लेकिन धूम भारी हो गई ।

राम के आदर्श थे वनवास, सेवा और त्याग,
राम के नाम पर अब कार सरकारी हो गई ।

दान-पेटी भर रही है रोज़ सोने-चाँदी से,
संत की कुटिया अचानक राजद्वारी हो गई ।

जो फ़क़ीरी की मिसालें दे रहा था कल तलक,
उसके आँगन में नई गाड़ी भी प्यारी हो गई ।

वेद, गीता, रामायण सब करुणा कहते रहे,
नफ़रतों की पाठशाला फिर भी जारी हो गई ।

भक्त समझा था जिसे भगवान तक का रास्ता,
वो दलाली की किसी मंडी का बारी हो गई ।

देश, धर्म और देवता सब नाम थे इंसान के,
इनके नामों पर मगर दीवार भारी हो गई ।

आत्मबोध सच कहा तो लोग नाराज़ हो गए,
झूठ बोला तो वही बात सरकारी हो गई ।

मनिहारन - मत्तगयंद सवैया

– श्री. वंदना ब्रह्मभट्ट 'नेह',
वडोदरा, गुजरात

अंबर पे घनघोर घटा सम केश प्रिया सिर पे लहराए ।
चंद्रमुखी व्रज आवत देखत चंद्र व सूरज खूब लजाए ।
जो मनिहारन भेष बनाकर माधव कंगन बेचन आए ।
देखत लाल हरे सब कंगन ग्वालन के मन को अति भाए ।।
घेर लिया सबने जब केशव श्याम बड़े मन में हरसाए ।
बीच प्रिया खड़ी देखत मोहन नैनन नीर जरा छलकाए ।
'नेह' प्रिया कर को पकड़े प्रभु बोलत लाल हरा कछु बोलो ।
गौर कलाइ छुड़ाकर पूछत हो तुम कौन व भेद हि खोलो ।।

जिंदगानी

– श्री. राजीव मिश्रा समंदर,
गोपालगंज, बिहार

अखबार मे तेरे शहर की कहानी लिखी है
खून के धब्बों पे स्याही की जिंदगानी लिखी है
जिंदगी की अदाकारी मे सारी रश्मे उलझी हैं
कौन सच्चा हैं कौन झुठा है ये कहानी लिखी है
लोग, मुहब्बत, भीड़, तन्हाई सब इल्ताफ–ए–करम है
मेरी आँखों मे धूल तेरी आँखों मे पानी लिखा है
जर्जर हो गयी हैं दरख्त मिरे जमीन की
अब कर्ज मे उसके छाँव की निशानी लिखी है
किसमे कितना गहरा है राज–ए–जहाँ, समन्दर !
अब झूठ के कागज पे मुहब्बत की जुबानी लिखी है
अखबार मे तेरे शहर की कहानी लिखी है
खून के धब्बों पे स्याही की जिंदगानी लिखी हैं

रहने दो

– श्री. मीरा सिंह
'मीरा', बक्सर, बिहार

फूलों जैसे शब्द हमारे,
अंगारों में ढलने दो ।
पंख बिना भी नभ छू लेंगे,
सपने आँख मचलने दो ।
रोक सका है कौन पवन को,
जोर जमाना रहने दो ।
नए दौर की बात करो अब,
बीती बातें रहने दो ।
मन की गाँठें खुल जाने दो,
दिल की बातें कहने दो ।
बढ़ते कदमों को मत रोको,
बंधन सारे रहने दो ।
हिम्मत बल से भरे हृदय को,
नूतन पथ पर बढ़ने दो ।
कल की चिंता छोड़ो साथी,
मुझे आज में जीने दो ।
लक्ष्य स्वयं आ जाएगा फिर,
बस विश्वास सँभलने दो ।
फूलों जैसे शब्द हमारे,
अंगारों में ढलने दो ।

चलती हूँ मैं राह अकेली

चलती हूँ मैं राह अकेली,
नहीं किसी से डरती हूँ ।
अवरोधों से जा टकराती,
नई कहानी गढ़ती हूँ ।।
नज़रें रहतीं आसमान पर,
पाँव धरा पर रखती हूँ ।
जोर–जुल्म से करूँ बगावत,
सत्य–डगर पर चलती हूँ ।।
जोश हृदय में भरा हुआ है,
किस्मत खुद ही लिखती हूँ ।
पथ में कितने कंकड़–पत्थर,
अंगारों पर चलती हूँ ।।
मैल नहीं जम पाता मन में,
निर्झर–सी मैं बहती हूँ ।
माता की मैं बिटिया प्यारी,
कड़ी धूप में तपती हूँ ।।
मुझको कहते लोग बावरी,
बातें सभी समझती हूँ ।
रास नहीं आता अँधियारा,
दीपशिखा बन जलती हूँ ।।

वरदान पाऊँ

अनगाए गीतों को गाऊँ,
पर पीड़ा को मैं सहलाऊँ ।
दुनिया कहती मुझे बावरी,
मन ही मन मैं तो मुस्काऊँ ।।
बीच खड़ी हैं जो दीवारें,
दिल चाहे, मैं उन्हें गिराऊँ ।
होता जब अन्याय कहीं भी,
ज़ोर–जुल्म से जा टकराऊँ ।।
देख किसी की भीगी पलकें,
ग़म दरिया में डूबी जाऊँ ।
अपने मन की पीर कहो अब,
किससे जाकर मैं बतलाऊँ ।।
दुनिया जिसको मारे ठोकर,
मैं उसकी हिम्मत बन जाऊँ ।
जिसके साथ नहीं हो कोई,
उसके साथ खड़ी हो जाऊँ ।।
सूनी–सूनी सी आँखों में,
उम्मीदों के दीप जलाऊँ ।
हर शोषित के साथ रहूँ मैं,
वरदान यही तुझसे पाऊँ ।।

खामोशी ही इश्क की महकती हुई सुगन्ध हैं

– डॉ. अशोक, पटना, बिहार

धीरे से उतरती है
रात की रेशमी चादर पर
तुम्हारी याद की आहट

बोलते नहीं लफ़्ज़
फिर भी बहुत कुछ कह जाते हैं
नज़रों की जुबान में

जहाँ शब्द थक जाते हैं
वहीं से शुरू होती है
इश्क की असली कहानी

खामोशी के दामन में
छुपा होता है
दिल का सबसे सच्चा रंग

हर धड़कन में
तुम्हारा नाम नहीं
तुम्हारा एहसास बसता है

हवा भी जब गुजरती है
तो जैसे
तुम्हें छूकर लौटती है

मैं सुनता हूँ
बिना आवाज़ के भी
तुम्हारी मौजूदगी को

ये जो ठहराव है
यही तो असली संगीत है
प्रेम का अदृश्य राग

चाँद भी चुप है आज
शायद वो भी
इश्क में डूबा हुआ है

खामोशी की इस भाषा में
सबसे गहरी बातें
सबसे हल्की होकर उतरती हैं

और अंत में
सब कुछ शांत होकर भी
बहुत कुछ कह जाता है

खामोशी ही इश्क की महकती हुई
सुगन्ध है

ईश्वर का सानिध्य

– डॉ. विनीत मोहन औदिच्य,
सागर, म.प्र.

हठात अपने प्रतिबिंब को
दर्पण में निहार कर
हतप्रभ रह गया हूँ मैं ।

सिर पर श्वेत हो चले केश
आँखों के नीचे गहरे काले गढ्ढे
त्वचा पर उभर आईं झुर्रियाँ
हाथों व पैरों की नसें ।

समय का त्वरित वेग
ले आया है कदाचित् जरावस्था
या है यह रुग्णावस्था के लक्षण ।

आश्चर्य ! मन किंचित नहीं भयभीत
वरन प्रफुल्लता से आलोडित
प्रस्तर वक्ष से फूट पड़ी है
मानो उत्साह की नन्ही कोंपल ।

ईश्वर के चरणों का सान्निध्य
प्रदान करता है गहन संबल
आत्मविश्वास, सुरक्षा व आत्मबल
प्रत्येक चुनौती का सहर्ष साक्षात्कार
करने का ।।

महँगाई की आग...!

– श्री. संजय एम. तराणेकर, इन्दौर, म.प्र.

गैस, पेट्रोल, डीज़ल के दाम,
हर दिन लिखते नए पैगाम ।
जेब हो रही और भी हल्की,
जीवन में छा रही हैं कड़की ।
पहियों की रफ्तार महँगी है,
सफर की हर डगर ठहरी है ।
खेतों से लेकर बाजारों तक,
वस्तु का मूल्य असहनीय है ।
यूँ मज़दूर की मेहनत रोती है,
गृहिणी भी चिंता में सोती है ।
अब रसोई में चूल्हा पूछ रहा,
कब राहत की कोई ज्योति है ?
जब भी ईंधन के भाव बढ़ेंगे,
हरेक सामान भी महँगे होंगे ।
हाँ, महँगाई के इस तूफान में
सपनों के दीपक भी डोलेंगे ।
शासकों का 'धर्म' यही होता,
जनजीवन को सरल बनाना ।
इन कीमतों पे संयम रखकर,
हर चेहरे को 'सुख' पहुँचाना ।
हम–तुम मिलकर स्वर उठाएँ,
जनहित की यूँ बात बतलाएँ ।
ऐसी नीतियाँ बने हिंदुस्तान में,
जिससे होठों पे मुस्कान पाएँ ।

राजनीति और रण

– एडवोकेट डी.के.कनौजिया,
दिल्ली

राजनीति के गलियारों में,
शब्द बड़े मधुर सुनाई देते हैं,
पर सत्ता की चौखट पर पहुँचते ही
अर्थ बदलते दिखाई देते हैं ।
वचन यहाँ अक्सर गिरवी रखे जाते हैं,
सपनों का व्यापार किया जाता है,
जनता की आशाओं को लेकर
सिंहासन का श्रृंगार किया जाता है ।
रणभूमि हो या राजपथ,
नियम लगभग एक जैसे हैं,
वहाँ शस्त्रों से युद्ध लड़ा जाता,
यहाँ मुस्कानों से वार किए जाते हैं ।
कभी धर्म के नाम पर,
कभी जाति के नाम पर,
कभी विकास के स्वप्न दिखाकर,
जनमत को बाँटा जाता है ।
नैतिकता की बातें होती हैं,
सभाओं और भाषणों में,
पर उसका स्थान अक्सर छोटा पड़ जाता है
सत्ता की आकांक्षाओं में ।
युद्ध जीतने से अधिक कठिन है
हृदय जीतना,
और राज करने से अधिक श्रेष्ठ है
जन–मन में बसना ।

प्रसवोत्सव

– श्री. कमलेश व्यास ‘कमल’,
उज्जैन, म.प्र.

आसमान तो रो रहा है
आप कहते हैं– बरस रहा है ।
सच तो यह है
वह धरती से मिलने को तरस रहा है ।

देवदार–सी पसरी बाहें
प्रेम अगन में सुलगते ज्वालामुखी
मिलने की तड़प में मचलते जलजले
या हिमालय–सी आँख से निरंतर बहता पानी है ।
या धरती की कोख में तड़पती रवानी है ।

जो भी है –
बिजली की तड़प से आता है आसमान
और समाता है धरती में ।

इस मिलन से –
वसुंधरा पर फूल खिलते हैं
फसलें लहलहाती हैं
नदियाँ बल खाती हैं
धरती पर हरियाली छा जाती है ।

इस प्रणय पर उत्सव होता है
दरअसल इस मिलन से –
धरा का प्रसव होता है ।

SHABARI SIKSHA SANSTHAN

Shabari Palace, 193, Second Agraharam, Salem - 636 001.

& 0427-4265414 0427-4552100

Visit us @ https://shabari.in

A glance about Vani Vikas

Answers for the Frequently Asked Questions.....

Application forms for Vani Vikas Exams will be issued only to the members of Shabari Siksha Sansthan. Annual membership fee Rs.100/-

Why Vani Vikas exams are conducted ?

The name **Vani Vikas** itself explains us clearly that, Vani Vikas is to motivate the non Hindi speakers to speak in Hindi.

Who conduct the Vani Vikas exams ?

The Vani Vikas exams are conducted by **SHABARI SIKSHA SANSTHAN**.

Is Vani Vikas, written exam or oral exam (Vivavoce) ?

Vani Vikas exams motivate the students to speak Hindi, this is not a written exam.

What is the minimum age limit for Vani Vikas exam ?

One who has completed 8 years shall appear for the exam. Those who are participating in the Vani Vikas first level must attach the Xerox copy of the birth certificate.

What is the basic educational qualification for Vani Vikas exam ?

There is no basic educational qualification for Vani Vikas exam, self-interest is enough.

During which months that Vani Vikas exams are conducted ?

Vani Vikas exams are conducted in January, April, July and October.

How many levels are there in Vani Vikas exam ?

The Vani Vikas exam consists of EIGHT levels.

Is there any separate text book for Vani Vikas exam ?

Yes, Vani Vikas exam consist of seperate text books for all the EIGHT levels.

Is it must to take part in Vani Vikas exam level by level ?

Yes, you are suppose to do this exam level by level only. You can’t do more than one level at the same time, in the same way you can’t able to apply directly to second level or any other level. Those who apply for second level to eighth level must enter the 10 digit register number (passed previous exam number) in the exam application form.

Can we know about the exam centres for Vani Vikas ?

If you have 30 students to appear for the exam you will have your own centre. If the students number (count) is between 10 to 29 you have to pay rupees 500 as exam centre charge. **In your centre few more students from outside may join with you without any prior information from us**. The PAID exam centre charge will never be returned.

A minimum 10 students must be there for a Batch or Term to apply for Vani Vikas Exam (January or April or July or October).

Does the Vani Vikas exam have the mark list and certificate ?

Within 30 days after the exam you will receive the mark list and within 60 days after the exam you will receive the Certificate. Results will be published in https://shabari.in.

Who will conduct the Vani Vikas exam ?

Experienced and efficient teachers will conduct the Vani Vikas exam.

Is there any sample questionnaire for Vani Vikas exam ?

Model question papers are at the end of the Vani Vikas text book.

Is Vani Vikas worth for students ?

By improving Hindi it is going to be definitely useful for the students and for their future carrier.

Details of the books :

Name of the Exam	Book
Vani Vikas Grade - 1	₹ 250.00
Vani Vikas Grade - 2	₹ 260.00
Vani Vikas Grade - 3	₹ 270.00
Vani Vikas Grade - 4	₹ 280.00

Name of the Exam	Book
Vani Vikas Grade - 5	₹ 290.00
Vani Vikas Grade - 6	₹ 300.00
Vani Vikas Grade - 7	₹ 310.00
Vani Vikas Grade - 8	₹ 320.00

Kindly pay the Vani Vikas books charges only through our web portal @ **https://shabari.in**

A minimum 10 students must be there for a Batch or Term to apply for Vani Vikas Exam (January or April or July or October).

महान संत शिव भक्त – तमिल नायनमार

कलिक्कम्ब नायनार

– विद्या सागर आर.जे. संतोष कुमार, कोवै, तमिलनाडु

काट दिए हाथ अपनी पत्नी का कलिक्कम्ब नायनार
लड़ते नहीं थे दोनों कभी एक दूसरे से करते थे प्यार
दोनों भक्ति से भरे हुए थे करते रहे निट अपना पूजा पाठ
शिव ही सब कुछ ते उनके लिए सदाशिव भजते रहे
शिव भक्तों की सेवा कर अपने आप को धन्य मानते रहे
पति की इशारों पर पत्नी वह हमेशा चलती रही
एक शब्द भी उनके विरुद्ध में वह कभी ना कहती थी
शिव की पूजा शिव भक्तों की आराधना वह भी दिल से करती थी ।

एक मिनट के लिए ही सही सोचती खड़ी थी
शिव भक्त की सेवा में एक पल के लिए वह रुक गई थी
देखा हुआ है चेहरा यह काम तो यही वह करता था
काम छोड़कर जो भगत यह कैसे बाबा निकला
नौकर जब बह रहा था तब भी ना इतना भला था
कामचोर था काम छोड़कर अभी वक्त का वेश धरा
पति झुक गए थे चरणवा हा जल से साफ करने
सोच में पड़ गई थी पत्नी पानी न दे पाई ।

ना कुछ पूछा ना कुछ बोला उठकर अंदर गया पति
क्या करने गया क्या लाने गया पता नहीं एक पल बीता
आया पति अपने साथ एक तलवार लेकर
काट दिया हाथ अपनी पत्नी का वह खींचकर
शिव भक्त की सेवा में पूर्ण मन से लग जाना है
उसके पूर्व आश्रम के बारे में क्या किसी को सोचना है ?
बेहोश होकर गिर पड़ी पत्नी वहीं जमीन पर
खून बहाते जान दे गई पत्नी एक ही पल पर ।

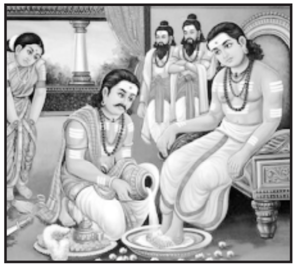

तिरुपेन्नागडम नगर का नाम था बहुत पुराना प्रदेश था
जन्म लिए यहीं पर शिव भक्त कलिक्कम्ब नायनार
वणिक कुल में पाए थे ये जन्म वाणिज्य करते रहे
वाणिज्य के साथ-साथ शिव भक्तों की सेवा करते रहे
शिव का नाम ले लेकर पंचाक्षरी जपते रहे
शिव भक्त की सेवा में शिव को सदा ये ढूंढते रहे
शिव भक्त को जहाँ कहीं यह देख लेते स्नेह सहित घर लाते
उनका खूब आदर सत्कार कर अपने आप को धन्य मानते ।

धर्मपत्नी मिली थी सब रूप से वह प्रिय पत्नी
साथ देती थी शिव भक्ति में शिव भक्तों की सेवा में
हर बार कोई भी घर आते मिलते हुए चेहरे से सेवा करती
पति की शिव भक्त सेवा में अपने आप को भी लगा लेती
कभी कुछ बोलने का मौका मिलता ही नहीं था
पता है उसको पति जो भी करता था सब कुछ सही था
एक बार जरा रुक गई कुछ सोचने लगी
जान देकर अपनी जमीन पर है अब गिर पड़ी ।

दंग रह गए शिव भक्त दोनों सामने बैठे हुए
कुछ घर नहीं पाया डर भी नहीं पाया खड़ा रहा
पत्नी की गलती सह नहीं पाया कम यह निभाया
करना क्या है यह भी वह पल भर भी सोच ना पाया
आए भोलेनाथ परमेश्वर महादेव प्रकट हो गए
पत्नी हाथ सहित जान भी प्रकार उठ खड़ी हुई
शिव की कृपा बनी रही, सेवा उनकी जारी रही
शिव भक्त की सेवा करते-करते शिव में मिले शिव बने ।

कलिक्कम्बर अमर बने भक्त की सेवा कर ।
पत्नी को भी दंड दिए भक्त महान बनकर ।।

बचपन

– श्री. सुनील प्रकाश भारद्वाज,
लखनऊ, उ.प्र.

बचपन कहाँ चला गया ।
जीवन में बहुत छला गया ।
वह कागज की नाव ।
नहाने भीगने का चाव ।
वह बरसात का पानी ।
करना अपनी मनमानी ।
वह छुपन छुपाई ।
डंडे से गुल्ली घुमाई ।
वह बर्फ के गोले ।
सुनकर मन डोले ।
स्कूल की वह पढ़ाई ।
छुट्टी में मौज मनाई ।
सब कहाँ चला गया ।
जीवन में बहुत छला गया ।
वह चेहरे का भोलापन ।
शुद्ध सात्विक सादा मन ।
चिंताओं से कोसों दूर ।
लेते थे मज़ा भरपूर ।
छड़ में दोस्ती छड़ में लड़ाई ।
फिर प्यार से अंगुली मिलाई ।
वो दीवाली खुशी से मनाना ।
अनार फूलजड़ी आतिशबाजी चलना ।
जले दियों की तराजू बनाना ।
खीलों गट्टों का व्यापार चलाना ।
सब कुछ चला गया ।
जीवन में बहुत छला गया ।
वह होली के रंग ।
भिगा कर पूरे अंग ।
रंगों के साथ करें जंग ।
बहाने करते पी हो भंग ।
वह राम रावण युद्ध ।
भावनाएँ थी शुद्ध ।
वह रावण का जलना ।
मेला में जाकर उछलना ।
बचपन बीत जाता है ।
सबकुछ याद आता है ।
मधुर जीवन चला गया ।
जीवन में बहुत छला गया ।

Revised Book fee for VANI VIKAS Exams
from
January-2027 Exams

Vani Vikas Grade-1	₹ 300
Vani Vikas Grade-2	₹ 310
Vani Vikas Grade-3	₹ 320
Vani Vikas Grade-4	₹ 330
Vani Vikas Grade-5	₹ 340
Vani Vikas Grade-6	₹ 350
Vani Vikas Grade-7	₹ 360
Vani Vikas Grade-8	₹ 370

पेड़ लगाएँ

– श्री. भूपसिंह
'भारती',
नारनौल, हरियाणा

आओ हम सब पेड़ लगाएँ

सूख गए हैं ताल तलैया,
रही नहीं पेड़ों की छैया,
सूरज दद्दा हुए कुपित हैं,
सांसत में पंछी गौरैया ।

मानव फँसा लोभ के घेरे,
काट लिए फिर पेड घनेरे,
इसीलिये वर्षा कम होती,
होते नहीं घनों के फेरे ।

सूरज गाता दीपक राग,
लगी बरसने देखो आग,
तपने लगी जमीन तवे सी,
हे मानव तू अब तो जाग ।

इस गरमी के क्या कहने,
गात पसीने लगे हैं बहने,
पेड़ लगाओ, पेड़ बचाओ,
पेड़ धरा के होते गहने ।

आओ हम सब पेड़ लगाएँ,
धरती को हम खूब सजाएँ,
कहे 'भारती' बैठ शाख पर,
गरमी से खग राहत पाएँ ।

चिड़िया

होती प्यारी–प्यारी चिड़िया ।
होती सबसे न्यारी चिड़िया ।।
सुबह सवेरे आती चिड़िया,
मीठा कलरव गाती चिड़िया ।
सबके मन को भाती चिड़िया,
नींद से हमें जगाती चिड़िया ।
चुन–चुन तिनके लाती चिड़िया,
सुंदर नीड बनाती चिड़िया ।
खूब फलों को खाती चिड़िया,
पेड़ों पर इठलाती चिड़िया ।
रेत में खूब नहाती चिड़िया,
वर्षा की हमें बताती चिड़िया ।
करो समय की कदर सदा,
यही सबक सिखाती चिड़िया ।

SHABARI COMPLETE HINDI GUIDES
FOR D.B.H.P. SABHA EXAMS
❖ Saral Hindi Parichaya Guide (D.B.H.P. Sabha, Trichy)
❖ Prathamic ❖ Madhyama
❖ Rashtrabhasha ❖ Praveshika
❖ Vish Poor ❖ Vish Utta ❖ Prav Poor ❖ Prav Utta ❖ Praveshika Tamil Guide ❖ Visharad Tamil Guide ❖ Praveen Tamil Guide
~~~~~ Available at ~~~~~
Shabari Book House, Salem.
Whatsapp : 94431-65414,
Phone : 94433-65414, 98427-65414
You may purchase via
https://books.shabari.org
~~~~~

बदल दिए

– श्री. राजेन्द्र
लाहिरी,
पमगढ़, छत्तीसगढ़

जब जाना अपनों के संघर्षों को,
तो हमने भगवान बदल दिए,
जब भी मिला हमें अवसर,
तो पूरे आसमान बदल दिए ।

वो कितना खुदगर्ज होता है,
जो समाज की पीड़ा भूल जाता है,
चंद सिक्कों की चमक में पड़कर
अपनों से ही दूर हो जाता है ।

इंसान होने का अभिमान छीन
देती है यह जाति की दीवार,
उपलब्धियों को भूल मनुष्य
करने लगता है जन्म पर गर्व अपार ।

जब जीवन बचाने को रक्त चाहिए होता है,
तब कोई नहीं पूछता जात और कुल,
न यह देखा जाता है कि
दाता ऊँचा है या फिर कहलाता है शूद्र, अतुल ।

उस घड़ी सबसे बड़ा सत्य यही होता है–
हर हाल में बचनी चाहिए जान,
तब याद नहीं रहती पदवी, प्रतिष्ठा,
न धन, न वैभव, न सम्मान ।

उन प्रतीकों ने हमें दिया ही क्या,
जिनके कारण अपमान सहे,
दुत्कार सहे, प्रहार सहे,
अनगिनत अन्याय और तिरस्कार सहे ।

मगर हमारी पुकार किसी ने न सुनी,
हम भी इंसान थे, यह किसी ने न गिना,
जब अनुभव की कसौटी पर परखा सबको,
तो भ्रम का हर आवरण छिना ।

अब परखकर देते हैं सम्मान,
अपने प्रतिमान बदल दिए,
जब जाना अपनों के संघर्षों को,
तो हमने भगवान बदल दिए ।

பரிச்சயா மற்றும்
ப்ராத்மிக் முதல்
பிரவீண்
வரையிலான
தேர்வுகளுக்குரிய
Q & A & கைடுகள்
விற்பனைக்கு
தயாராக உள்ளது.

कमाल करते बाबा

– श्री. नलिन खोईवाल, इंदौर,म.प्र.

दिनकर वंदन करते बाबा
कलरव खग का सुनते बाबा
डाल विहग को दाना–पानी
फिर दफ्तर को जाते बाबा ।

सबसे अच्छे मेरे बाबा
सबसे प्यारे मेरे बाबा
झूठ कपट की इस दुनिया में
कितने सच्चे मेरे बाबा ।

मेहनत से न कभी घबराते
कर्म करना हमें सिखलाते
मुश्किलों से ना डरते कभी
हँसते–हँसते सब सह जाते ।

सपनों की दुनिया है बाबा
लाते प्यारी गुड़िया बाबा
उन सा ना कोई जग में
सारा जगत घूमिया बाबा ।

शाम को जब घर वापस आते
झोला भर कर सपनें लाते
हमको मुस्कुराता देख कर
वह अपने दुःख भूल जाते ।

गीत कविता वो बहुत लिखते
और पेपर में खूब छपते
नाम बहुत है जग में उनका
लोग सभी उनको कवि कहते ।

अपनी धुन में प्रसन्न रहते
नदी सरीखा निर्मल बहते
बाबा सुनते हैं सबकी पर
अपनी पीड़ा कभी न कहते ।

क्या–क्या कमाल करते बाबा
जीवन निहाल करते बाबा
हर मुश्किल और मुसीबत का
पल में निकाल करते बाबा ।

माया

– श्री. राकेश कुमार,
फतेहपुर, बिहार

कुछ जीवन के इस पार,
कुछ जीवन के उस पार,
समय से प्रतिबद्ध है ये संसार,
जीवन की परिभाषा, का सार,
खुशियों, गमों से नित्य इकरार,
जीवन की दिशाओं का आधार,

क्यों क्या पाया, क्यों क्या खोया,
कब था जागा, कब था मैं सोया,
कब था हँसा मैं, कब था मैं रोया,
आनंद भाव तब विदा हुए,
जब अहंकार का बीज था बोया,
क्या है मौलिक, क्या है माया,
अज्ञानी मन ये समझ न पाया,

पावस गीत

पानी बरसे

– श्री. अशोक आनन, शाजापुर, म.प्र.

रिमझिम–रिमझिम पानी बरसे ।
बादल निकले अपने घर से ।
धरा की –
सूखी फरिया भींगी ।
चुभे न –
बदन को धूप तीखी ।
कहाँ छुपी वह बिजली के डर से ।
रिमझिम–रिमझिम पानी बरसे ।
नदी रेत की –
उफनी जल से ।
सागर के घर –
पहुँची चलके ।
प्यार से चूमे गाल अधर से ।
रिमझिम–रिमझिम पानी बरसे ।
पेड़ों का भी –
रंग अब निखरा ।
पीर–पर्ण का –
कुनबा बिखरा ।
सूखा गुज़रे न अब इधर से ।
रिमझिम–रिमझिम पानी बरसे ।
घर की आँखें –
टप–टप टपकें ।
बारिश से –
जायें कहाँ बचके ।
पानी गुज़रा उनके सिर से ।
रिमझिम–रिमझिम पानी बरसे ।

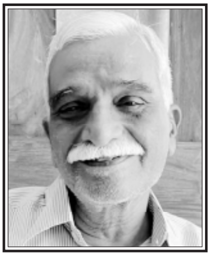

उत्तर देगा केवल काल

– श्री. पुष्करराय जोषी, राजकोट, गुजरात

सारे विश्व में मचा है हाहाकार,
चल रहा है जंग खूँखार,
किसकी होगी जीत,
किसकी होगी हार ?
सदियों से जंग जारी है
मानवी और जंतुओं के बीच,
मानवी तो जन्म से ही
होता है कमजोर,
जबकि जंतु जन्म से ही
होते हैं कठोर,
फिर भी
जान हथेली में लेकर
लडते हैं दोनो,
कब यह रुकेगा ?
कौन किसके आगे झूकेगा ?
उसका उत्तर दे सकता है
केवल काल ।

नवगीत

अपनों से हारे

– श्री. पंकज मिश्र 'अटल',
लखीमपुर, उ.प्र.

मौन हुए
वातायन सारे ।
सिसक रहे हैं
देहरी द्वारे ।
गुमसुम
बैठी धूप
सिमट कर ।
छाया भी
छाया से
लिपटकर ।
हुए अनमने
से फिरते सब,
अपने ही अपनों से हारे ।

नदी
भागती
डरी-डरी सी।
कुछ
प्रश्नों में,
घिरी-घिरी सी ।
सूनेपन में
चुप्पी को ही
धीरे-धीरे कोई पुकारे ।
कहीं
चिरैया,
चिहुँक रही फिर ।
लगता
फिर से
आज गई घिर ।
सिमट रही
डैनों में अपने,
मौसम के ही डर के मारे ।

घनाक्षरी

– श्री. वसंत,
जमशेदपुर, झारखंड

खीर नहीं, पूड़ी नहीं,
लड्डू नहीं, पेड़ा नहीं,
मधुर जलेबी नहीं,
नहीं पकवान हो ।
रोटी भले सूखी ही हो,
नमक और मिर्च हो,
मटके का पानी रहे,
कोई न मिष्टान्न हो ।
सीमाएँ सुरक्षित रहें,
खेत खुशहाल रहें,
शस्य श्यामला हो धरा,
सुंदर विहान हो ।
आँख जो दिखाए रिपु,
आँख झट निकाल लें,
सैनिकों के खून में हाँ,
इतना उफान हो ।

मातृशक्ति

– डॉ. राम गोपाल सिंह बघेल, पोर्ट ब्लेयर, अ.नि.द्वीप समूह

पत्थरों की छाती पर ग़र
धमक से पाँव रख दूँ
तो जमीन दरक जाती है
कभी बायें कभी दायें
थोड़ी सी सरक जाती है ।

वह जड नहीं चैतन्य है,
पेड़ की जड़ सी निरत
अभेद पोषण के लिए
जमीन में धंस जाती है ।

मैं चिन्मय सतत चैतन्य हूँ,
सगुण स्वरूप साकार हूँ ।
तथापि निर्वेद–सवेद के लिए
सदा निपट निराकार हूँ ।
पल्लवित पुष्पित फलित हूँ,
अपना सर्वस्व देकर भी
देखो दमित दैन्य दलित हूँ ।

असीम आँचल की छाँव तले
केवल तू ही तो नहीं !
सारी सृष्टि शरणागत ।
अरे तू ! पलने वाले कृतघ्न !
मूढ़ मेरे आँचल से न खेल ।
सुखन–ऐ–शाख पर बैठी
बेसुध वलाका तो नहीं ।
जिसे तुम भस्म कर दो
सृष्टि हूँ दृष्टा–दृष्टि हूँ मैं ।
आ बैठ मेरे पास तोषा तो कर
शांत हो साँस ले भरोसा तो कर ।।

मित्र वही है ।।

– श्री. पवन कुमार भारतीय, मुजफ्फरनगर, उ.प्र.

देखो उसको जिसे देख मन शीतल हो,
जिसकी आँखों में खुशी का जल हो,
मुश्किल घड़ी में भी जो निडर हो ।
साथ निभाने को जो अडिग हो
सच मानो तो मित्र वही है ।...1

कुत्सित मन को, जो निर्मल कर दे,
सद्गुण जो जीवन में भर दे,
मान–सम्मान की उन्नति कर दे,
धन, कुटुम्ब संरक्षित कर दे,
सच मानो तो मित्र वही है ।...2

वचन के प्रति प्रतिबद्ध रहे जो,
पवित्र–चरित्र से जो आबद्ध हो,
सम्बन्धों में जो निश्छल हो,
जिसमें न षड्यंत्र शामिल हो,
सच मानो तो मित्र वही है ।...3

माँ जीवन के हर पल में

– डॉ. किशोर अग्रवाल,
रायपुर, छत्तीसगढ़

माँ रोटियाँ बेल रही होती
मैं उनकी पीठ पर हथेलियाँ टिकाए
झूला सा झूलता,
रोटियाँ बेलने की गति से
झूलना बड़ा अच्छा लगता ।
माँ को उठा लेता बाहों में
एक चक्कर, दो चक्कर, तीन
चकफेरियाँ लगाता माँ हँसती,
उतारने को कहती,
हँसती जाती, उतार दे बदमाश ।
बूढी माँ, थोड़ी झुकी झुकी सी
मंदिर जाती, पीतल की बाल्टी लिये,
सीढियाँ कठिन, चढ़ाता सहारे से
गोद में उठाकर गाड़ी मे बिठाता,
देती ढ़ेरों आशीष बार बार ।
सो गई माँ सदा के लिये,
अर्थी सजा कांधे पर चढा.फूँक आया
उसे मुक्तिधाम में,
फूँक आया साथ ही बचपन, शरारत, आशीष
तू क्यूँ और कहाँ गई माँ ?
उम्र से बड़ा पर दिल से बालक हूँ
मन फिर तेरी गोद चाहता,
कान तो ऊमेठ दो मेरे
बलैय्या तो ले लो मेरी
थका हूँ जमाने से, सुला दो ना माँ ।

बदलेगा

– श्री. मोहित.जे.
संतोष, कोवै,
तमिलनाडु

एक परिवर्तन से बदलेगा इतिहास
एक परिवर्तन से बदलेगा विश्वास
समय बदलता है मौसमों की तरह
उस समय के साथ हमे बढ़ना है हर जगह
बदलना चाहिए हमको
चाहे अंदर से या बाहर से
बदलना चाहिए हमें
इस दुनिया के अनुसार
तुम बदलो तब बदलेगा
तुम बढ़ो तेरी योग्यता भी बढ़ेगी ठहरेंगे तो ठहरेंगे हमेशा
नहीं बदलेगी इन लोगों की यह तमाशा
कार्य करो अपनीं स्थिति के अनुसार
फैसला और त्याग के साथ
जब तुम यह करोगे सदा
तेरी कठिनाइयाँ कहेंगी अलविदा

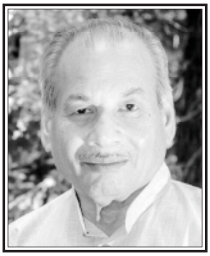

संस्कार से चरित्र श्रेष्ठ बनते हैं

– विद्यावाचस्पति डॉ. कर्नल आदि शंकर मिश्र 'आदित्य', लखनऊ, उ.प्र.

उत्तम शिक्षा और अच्छे संस्कार
जीवन में विकास के मूल मंत्र हैं,
शिक्षा से ज्ञान विज्ञान बढ़ते हैं,
संस्कारों से चरित्र श्रेष्ठ बनते हैं ।

जो शिक्षित है उसे अज्ञानी की तरह
किसी से झुकने की ज़रूरत नहीं है,
सुसंस्कृत व्यक्ति को अनावश्यक
नतमस्तक होने की ज़रूरत नहीं है ।

बढ़ी हुई उम्मीदों और वास्तविकता
के बीच अंतर मानसिक तनाव होगा,
इन दोनो के बीच में जितना ज़्यादा
अंतर होगा उतना बड़ा तनाव होगा ।

हमें अपने दैनिक जीवन में हमेशा
वास्तविकता स्वीकार्य होनी चाहिये,
भौतिकता की चकाचौंध में फँस कर
व्यर्थ की उम्मीद नहीं करनी चाहिये ।

झूठ की तारीफ़ और सच का मज़ाक
कुछ ऐसा ही है आजकल का रिवाज,
झूठ को सच साबित कर लेते हैं लोग,
जानना कठिन है दुनिया का मिज़ाज़ ।

बीते हुये कल का पछतावा और आने
वाले कल की चिंता, दो ऐसे सत्य हैं,
जो हमारी वर्तमान की, खूबसूरती
व प्रसन्नता को भी चुरा ले जाते है ।

हर किसी को स्थितियों के अनुसार
जीवन में बदलाव करना होता है,
आदित्य परिस्थिति के अनुसार
कार्य कलापों को ढालना होता है ।

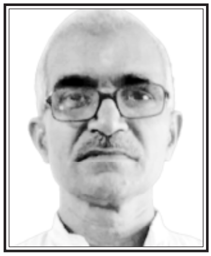

गिल्लू खाते आम रसीला

– डॉ. भगवान प्रसाद उपाध्याय,
प्रयागराज, उ.प्र.

गिल्लू खाते आम रसीला
पका हुआ है पीला–पीला
फुदक रहे थे वे इधर उधर
मिला आम तो कुतर कुतर
बहुत चाव से आम खा रहे
मीठे फल का मजा पा रहे
दाने चुगने आते वह रोज
आज मिला आम का भोज
हम भी उनके साथ हो गए
गिल्लू भाई मगन हो गए

हे ! कोकिल सुन

– श्री. मुकेश अमन,
बाडमेर, राज.

मधु कंठी कोकिल मधुरा गा
प्रीत भरा रस गीत सुना ।

मधु प्यासे सूखे जन जन को
सुर–सरिता बस गीत सुना ।।

काक भरे सारे वन उपवन,
व्याकुल है सबका जीवन मन ।

कर उत्सव कर अंतस के घर,
तान भरो अब हे ! कोकिल सुन ।

कूक सुनो झकझोर उठे दिल
अब अपना मन मीत बना ।

डाल–डाल विष कड़वापन से
अब खतरे में है अपनापन

कहाँ मधुता देखे अब कोकिल
तन्हाई सब है सूनापन

उपवन में ऐसी सौरभ कर
प्रीत अमन मन रीत बना । प्रीत भरा...।।

देश भक्ति गीत

चुनर हिन्दुस्तानी ।

– श्री. श्याम कुंवर भारती, बोकारो, झारखंड

मेरी रंग दे रंगरेज चुनर हिन्दुस्तानी ।
हरा केसरिया सादा मदद मेहरबानी ।

मेरे पिया फौजी करे सीमा रखवाली ।
गबरू जवान पिया छाती छप्पन इंचवाली ।
कोई नहीं टीके आगे चीन पाकिस्तानी ।
मेरी रंग दे रे रंगरेज...।

हरी रहे धरती मेरी दुआ करे भारती ।
आओ पिया आओ उतारूँ तेरी आरती ।
ठंडी बयार बहे रहे मस्त जिंदगानी ।
मेरी रंग दे रंगरेज...।

फहरे तिरंगा हरदम ऊँचा मस्त गगन में ।
झुके न झंडा दिल में रहे देश भक्ति मगन में ।
जान रहे न रहे मेरी ये खून है खानदानी ।
मेरी रंग दे रंगरेज चुनर हिन्दुस्तानी ।

पिंजरे में बंद परिंदे

– श्री. चन्द्रकांत खुंटे 'क्रांति',
जांजगीर, छत्तीसगढ़

एक औरत की योग्यता
यहाँ कागज़ के टुकड़ों और रसोई की खुशबू से नहीं नापी जाती
यह तय होती है उस गूँगपन के कुएँ से
जो अपने भीतर हर कड़वी बात को
बिना गूँज के समा लेती है
आप कितनी अच्छी बहू हैं ?
इसका फैसला आपके सलीके
या पढ़ाई से नहीं होता है
इसका पैमाना तो वो लोहे के गर्म चने हैं–
जो रोज़ तानों की शक्ल में
आपकी हथेली पर रखे जाते हैं
और आपको उन्हें बिना उफ़ किए चबाना होता है ।
बिना पलटे, बिना एक भी तीखा सवाल किए
जो अपनी ज़ुबान पर बर्फ़ की सिल रख ले
और आँखों के खारे समंदर को
पलकों में बाँध को रोक ले
उसी के सिर पर सजता है
'सभ्य' होने का ताज
यह कैसा नियम है इस चौखट का
जहाँ अपनी ही आवाज़ को
पिंजरे में बंद परिंदे की तरह मार देना
संस्कारों की पहली शर्त बन जाता है ।।

अनुगमन...

– श्री. मनोज शाह 'मानस',
नई दिल्ली

कुछ हिसाब किताब
बाकी था
मिलना है
कुछ लेनदेन
बाकी था
चुकाना है...!
खैर...!
मन की करोबार ही तो है
प्रेम भी...,
कुछ सपनों की विनिमय
कुछ जीवन की समझौता
कुछ भाषा की संयमता
कुछ भविष्य की लेखा–जोखा
विश्वास नहीं है
तो फिर...,
विगत की सारा
हिसाब किताब
पलटकर देखना
और करना
हमारा प्रेम की अनुगमन

बरखा की तुम पहिली फुहार हो

– श्री. अशोक पटेल
'आशु', शिवरीनारायन,
छत्तीसगढ़

बरखा की तुम, पहिली फुहार हो,
मेरे परिणय की, तुम मनुहार हो ।
सावन की शीतल, हरियाली बहार हो,
तुझमें भीग जाऊँ, तुम प्रेम की धार हो ।
अन्तः हृदय के प्रीत की, तुम पुकार हो,
जीवन को पूर्ण, करनेवाली उपकार हो ।
तुम जीवन की, सबसे बड़ी उपहार हो,
तुम मेरी साया, जीवन का आधार हो ।
तुम मेघ–राग में, मेरी मल्हार हो,
तुम बरखा की, शीतल बहार हो ।
तुम बरसते, सावन की वर्षा बयार हो,
तुम अंतर्मन को, भिगोती बौछार हो ।
तुम कोयल की, कूकती मीठी–गान हो,
तुम ही मेरे सुरीले, संगीत की तान हो ।
तुम साथ में, चलनेवाली मेरी आस हो,
तुम ही मेरी हमसफ़र, और विस्वास हो ।

दर्द

– श्री. पूरवी
तालुकदार,
बेंगलुरु, कर्नाटक

दिल का दर्द
दिल में ही रहने दो ।
दूसरों को बताने से बेहतर है कि
आँसुओं के साथ खुद पी जाओ ।
खुद पीओगे तो
शायद कोई हल निकलेगा,
अगर दूसरों को मालूम पड़े
तो सामने से तो हम दर्दी जताएँगे,
पीठ पीछे और दो बातें जोड़कर
वही लोग ज़ख़्मों पर
नमक छिड़केंगे ।

योग

– डॉ. अनन्त कीर्ति वर्द्धन,
मुजफ्फरनगर, उ.प्र.

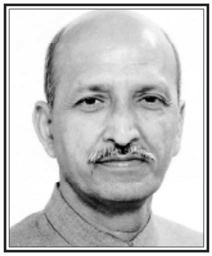

निज स्वास्थ्य के लिये, योग को अपनाइये,
मानव कल्याण हित, योग को बतलाइये ।
सर्वे सन्तु निरामया, है संस्कृति का आधार,
स्वस्थ तन का आधार, योग को समझाइये ।

योग, संगीत और जीवन, सबका समन्वय चाहिये,
खान पान–नियम संयम, सबका समन्वय चाहिये ।
सत्य आचरण, आहार विहार, व्यायाम से जोड़िये,
स्वस्थ तन हो निर्मल मन, सबका समन्वय चाहिये ।

तन से मन की यात्रा, ध्यान से सम्पूर्ण होती,
मन से ब्रह्म की यात्रा, योग से परिपूर्ण होती ।
शिव ने सिखाया योग, पतंजलि ने सूत्र रचे,
आत्मा जानने की यात्रा, समन्वय से पूर्ण होती ।

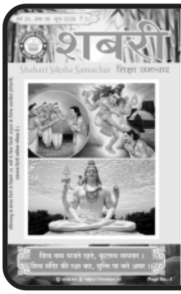

पाठकों के पत्र ...

पत्रिका के सभी अंक बहुत ही प्रेरणादायक और सुन्दर हैं। त्रुटि रहित मुद्रण और विषय वस्तु से पत्रिका और भी पढ़ने योग्य हो गई है। धन्यवाद।

– श्री. नवीन कुमार गुप्ता, चेन्नै, तमिलनाडु

दक्षिण के लेखन और हिन्दी के लिए निष्ठा से कार्य करने की जानकारी के लिए शबरी का विशेष महत्व है ।

– श्री. राजेन्द्र परदेसी, लखनऊ, उ.प्र.

बहुत–बहुत धन्यवाद प्रिय श्रीधर सेलम जी । शबरी शिक्षा समाचार का जून 2026 अंक पाकर बहुत खुशी हुई । मेरी रचना को स्थान देने के लिये बहुत–बहुत धन्यवाद। दक्षिण भारत से हिन्दी साहित्य का प्रचार प्रसार निरंतर करते रहने का आपका प्रयास अत्यंत सराहनीय है। बहुत–बहुत बधाई एवं हार्दिक शुभकामनाएँ।

– विद्यावाचस्पति डॉ. कर्नल आदि शंकर मिश्र 'आदित्य', लखनऊ, उ.प्र.

आदरणीय संपादक जी, सादर नमस्कार। शबरी समाचार का पीडीएफ नियमित मिल रहा है । हिन्दी के प्रचार–प्रसार के लिए कोटिश धन्यवाद । बहुत अच्छी पत्रिका निकाल रहे हैं ।

– श्री. मीरा सिंह 'मीरा', बक्सर, बिहार

आदरणीय महोदय, सप्रेम नमस्कार । आपका हिन्दी के प्रति प्रेम और कार्य वाकई सराहनीय है । मुझे गर्व है कि ऐसी हस्ती मेरे मित्र है । आपके कार्य के लिए हार्दिक बधाई ।

– श्री. मधुकर सूर्यवंशी,
नासिक, महाराष्ट्र

शबरी के तिरुवल्लुवर की बात पढ़कर मुझे महान जयदेव की अष्टपदी की याद आती है । राधाकृष्ण की विरह वेदना के तुल्य वर्णन में कैसे करते है । कवियों के मन में इस दुनियाँ को देखते ही शायद अपने वश छोड़कर उस आनंद मय भगवान कृष्ण और राधा के पास दौड़ जाता है । इसीलिए कविगण की लिखावट में उस अनूठी प्रेमियों का ही वर्णन फूटकर निकल पड़ रहा है ।

तिरुवल्लुवर की यह अनूठी शैली बहुत आनंद देने लायक है वह भी हिन्दी में प्रकट करते समय उसका महत्व बढ़ जाता है शायद । लेखक को बधाइयाँ ।

– श्री. शारदा, चेन्नै, तमिलनाडु

प्रिय महोदय,

नागरी प्रचारिणी काव्य गोष्ठी ह्वाट्स एप से प्राप्त लिंक से शबरी शिक्षा समाचार का अप्रैल 26 अंक पढ़ा । तमिलनाडु जैसे सुदूर अहिन्दी भाषी प्रदेश के एक नगर सेलम से प्रकाशित हिन्दी की सेवा के लिए समर्पित पत्रिका परिवार के सभी सदस्यों को सादर अभिवादन तथा सभी का अभिनन्दन ।

विविध प्रकार की सामग्री से भरपूर इस सुन्दर पत्रिका के सम्पादन एवं प्रकाशन के लिए बधाई ।

– श्री. दिवाकर प्रसाद तिवारी,
देवरिया, उ.प्र.

आदरणीय श्रीधर जी !

शबरी जून – 2026 वर्ष 28 अंक 06 पढ़ा । यकीनन शबरी पत्रिका की विषयवस्तु और भाषा शैली प्रभावोत्पादक, समसामयिक एवं बोधगम्य है । उत्तम प्रकाशन के लिए बहुत बहुत साधुवाद । आपके स्वस्थ एवं दीर्घ जीवन कामना करता हूँ ।

– डॉ. राम गोपाल सिंह बघेल,
पोर्ट ब्लेयर, अ.नि.द्वीप समूह

दक्षिण के लेखन और हिन्दी के लिए निष्ठा से कार्य करने की जानकारी के लिए शबरी का विशेष महत्व है ।

– श्री. राजेन्द्र परदेसी, लखनऊ, उ.प्र.

आदरणीय नमस्कार

आपकी लोकप्रिय शबरी पत्रिका का फरवरी 2026 का अंक पढ़ा प्रसन्नता हुई । कि आप इस तरह साहित्य सेवा कर रहे हैं कि आपकी जितनी प्रशंसा की जाये कम है । मैं प्रत्येक माह इसका इंतजार करता हूँ कि कब पढ़ने को मिले । मैं भी अपनी रचना भेज रहा हूँ । अगर स्थान हो और स्तरीय हो तो स्थान प्रदान करने की कृपा करें । सादर ।

– डॉ. राजेश तिवारी 'मक्खन', झाँसी, उ.प्र.

साहित्यकारों से निवेदन है कि वे स्वरचित, अप्रकाशित रचनाएँ मात्र भेजें । अन्य पत्रिकाओं व सोशियल मीडिया या अन्य जगहों पर प्रकाशित रचनाएँ कभी नहीं भेजें ।

नवांकुर

जन्मदिन

- लक्षिता श्रीधर,
सोना कॉलेज,
सेलम, तमिलनाडु

हर किसी को अपना जन्मदिन मनाना बहुत अच्छा लगता है। हर इंसान अपने परिवार के साथ मनाना चाहता है। इस बार का मेरा जन्मदिन मेरे लिए बहुत खास है क्योंकि, मैं 18 साल की होनेवाली हूँ। यह जन्मदिन बहुत अलग है क्योंकि मैं कोई छोटी बच्ची नहीं रही, अब अकेले बाहर जाना पड़ेगा, हर किसी परिस्थिति से खुद बाहर निकलना होगा, ऐसी बहुत सारी जिम्मेदारियाँ मुझे खुद निभाना होगा। और इस जन्मदिन के बाद मैं कॉलेज भी जानेवाली हूँ। इसीलिए मेरा पूरा जीवन बदल गया है। 18 साल होने पर हर किसी को एक नया अनुभव होता है। बहुत सारी भावनाओं को एक साथ अनुभव कर सकते हैं जैसे कि, खुशी, डर और अपनी भविष्य को लेकर भय। इसीलिए इस साल का जन्मदिन मेरे लिए बहुत खास है।

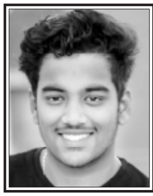

जब सब कुछ खो गया

- प्रजित. जे. संतोष,
सी.ऐ.टी. कॉलेज, कोवै,
तमिलनाडु

एक लड़का था, चुप और टूटा हुआ,
उसने बहुत कुछ खो दिया था,
कुछ सपने, कुछ रिश्ते,
और खुद पर विश्वास भी।

हर दिन उसे अंधेरा लगता था,
हर रात और भी लंबी,
उसे लगता था कि अब कुछ नहीं बचा,
और आगे बढ़ने की कोई वजह नहीं।

फिर एक दिन उसने आईने में देखा,
और एक सवाल पूछा,
"क्या मैंने सच में सब कुछ खो दिया है ?"

कुछ पल बाद उसे जवाब मिला,
"नहीं, मैं अभी भी यहाँ हूँ।"

उसने समझा कि जब तक वह खुद मौजूद है,
उम्मीद भी मौजूद है,
सपने फिर से बनाए जा सकते हैं,
और ज़िंदगी फिर से शुरू की जा सकती है।

उस दिन से उसका दर्द उसकी ताकत बन गया,
और उसका अकेलापन उसका शिक्षक।

क्योंकि जब उसने सब कुछ खो दिया,
उसे एक चीज़ मिली जो सबसे कीमती थी,
खुद का साथ।

देववाणी संस्कृत

– श्रीमती. अलमेलु कृष्णन, चेन्नै, तमिलनाडु

पठितम्, अभिरुचितम्, अनूदितम्

पुरातन कुञ्चिका

एकः सेवानिवृत्त प्राध्यापकः आसीत् । तस्य प्रतिरात्रिम् एकां पुरातन–काष्ठमञ्जूषां कीलयितुं अभ्यासः आसीत् । तस्यां मञ्जूषायां तस्य अतिबहुमूल्यानि लेख्यपत्राणि, स्मृतयः, अल्पं धनं च आसन् ।

एकदा सः तां लघुकुञ्चिकां नष्टवान् । सः स्वस्य उत्पीठिकायां, कपाटिकासु पुस्तकधानिकासु, कालीनकानाम् अधः इति सर्वत्र अन्वेषणं कृतवान् । किन्तु किमपि न प्राप्तम् ।

सः स्वपुत्रं समाहूतवान्, यः एकः अभियन्ता आसीत् । पुत्रः विद्युदुपकरणानि, करदीपाः हस्तोपकरणानि च गृहीत्वा आगतः । सः तालं सावधानं सम्यक् परीक्ष्य अवदत्, ''चिन्ता मा कुरु पिताश्री ! अहं एतत् भक्त्वा उद्घाटयिष्यामि ।''

तदा प्राध्यापकः अवदत्, ''तिष्ठ, आदौ मम पुरातनं महाविद्यालयस्य सहप्रकोष्ठीं आह्वयामि ।''

''सः किमर्थं ? सः तु कश्चित् तक्षकः न खलु ?'' इति पुत्रः भ्रमितः अभवत् ।

कञ्चित् कालानन्तरं, सः पुरातन–सहप्रकोष्ठी आगतवान् । उभौ अपि – उत्साहेन हसित्वा स्व महाविद्यालयस्य दिनानां विषये सम्भाषणं प्रारब्धवन्तौ ।

एकघण्टानन्तरं, सहसा सः मित्र: प्राध्यापक मित्रं अपृच्छत्, ''किं त्वं छात्रालये यथा करोषि स्म, तथैव इदानीमपि स्व पुरातन–शब्दकोषे प्रमुखाणि वस्तूनि गोपयसि ?''

प्राध्यापकः स्तब्धः अभवत् ।

सः स्वस्य पुस्तकालयं गत्वा, एकं स्थूलं शब्दकोषं बहिः आकृष्टवान् । तत्र – पृष्ठानां मध्ये सा लघुकुञ्चिका आसीत् !

पुत्रः हसन् अवदत् ''मम सर्वाणि अभियान्त्रिक–उपकरणानि यत् कर्तुं न शक्नुवन्ति स्म, तत् भवत: मित्रेण साधितम्, यतः सः त्वाम् सम्यक् जानाति स्म'' इति ।

प्राध्यापकः सस्मितम् अवदत् विशेषज्ञः समस्यानां समाधानं कर्तुं शक्नोति, परन्तु मित्राणि वयं कुत्र अस्मान् विस्मृतवन्तः इति स्मारयन्ति ।''

नीति : जीवनस्य विविधेषु अध्यायेषु ये त्वाम् अजानन्, तैः सह सम्पर्कं रक्षन्तु । कदाचित् ते केवलं समाधानं न ददति, अपितु तव विस्मृतान् भागान् अपि अन्वेष्टुं साहाय्यं कुर्वन्ति ।

अनुष्टुप-छंदाः

– श्री. मोती प्रसाद साहू,
अल्मोड़ा, उत्तराखण्ड

रहसि रावणाद्भीता:
दुश्शासनात् चतुष्पथे ।
तिष्ठनं गमनं चोभे
बालिकाभ्य: सुदुष्करम् ।।

कुर्वन्ति शोषणं ताषाम्
कार्यस्थले विधर्मिण: ।
तै: रचितेन कुटेन
भवन्ति विवशा: च ता: ।।

कोशे संरक्षितं वित्तम्
आभूषणं तथैव च ।
'मतलोभे' दुराचारी
कन्या कुत्र सुरक्षिता ।।

தமிழமுது – நோய்க்கு இடம்கொடேல்

– எம். ஸ்ரீதர்,

நிறுவனர் : சபரி சிக்ஷா சன்ஸ்தான், சேலம், தமிழ்நாடு

உடல் வளர்த்தேன் என் உயிர் வளர்த்தேனே... திருமூலரின் தெய்வத்திரு வரிகள் மனித உடலின் இன்றியமையாமையை மிக அழகாக எடுத்துரைக்கின்றன.

''உடம்பார் அழியின் உயிரார் அழிவர்
திடம்பட மெய்ஞானம் சேரவும் மாட்டார்
உடம்பை வளர்க்கும் உபாயம் அறிந்தே
உடம்பை வளர்த்தேன் உயிர் வளர்த்தேனே !''

உடம்பார் அழியின் உயிரார் அழிவர்: உடல் ஆரோக்கியம் குன்றினால், உள்ளே இருக்கும் உயிரும் அழியும். உடலைச் சரியாகப் பேணிக் காக்கத் தவறினால், உறுதியான ஞானத்தை அடைய முடியாது. எனவே, உடலை ஆரோக்கியமாக வளர்க்கும் வழிகளை (உபாயம்) அறிந்து, உடலைப் பேணி வளர்த்தேன்; அதன் மூலமாக என் உயிரையும் நலம் பெறச் செய்தேன் !

திருமூலர் மட்டுமல்லாமல் சாமானிய மக்களின் குரலாக சுவர் இருந்தால்தானே சித்திரம் என்ற பழமொழியை கேட்டிருப்பீர்கள். உயிரை வளர்க்கும் உயிரை காக்கும் உயிர் வாழ வழிவகுக்கும் மூலமே நமது உடல்.

உடலினை உறுதி செய் என ஆன்றோர்களும் சான்றோர்களும் சொல்லவது இந்த உடல் உறுதியாக இருந்தால் மட்டுமே அதன் உயிரும் உடலில் குடியிருக்கும் என்பதாகும்.

உடற்பயிற்சியுடன் மூச்சுப் பயிற்சியும் இந்த உடலினை உறுதி செய்வதோடு உயிரையும் வலுவாக்க வழிவகை செய்யும். நமது உடலின் ஒவ்வொரு உறுப்பும் ஒப்பில்லாதது உயர்தன்மை வாய்ந்தது. கால்கள் நடக்கத் தவிர நான் எழுந்து நிற்பதே கேள்விக்குறியாகி விடும். கைகள் இன்றி வாய்க்கு உணவு கிடைப்பது நடக்காத காரியம் ஆகிவிடும். துடிக்கின்ற இதயம் நின்று போகும்போது வெளிவரும் மூச்சானது சொல்லாமலே சென்று விடும். கண்கள் இருந்தால் மட்டுமே காட்சிகள் தெரியும் காதுகள் இருக்கும் போது மட்டும் தான் கேட்க முடியும் வாயின்றியும் வாழ்வில்லை என்பது நம் எல்லோருக்கும் தெரியும்.

உடல் உறுப்புகளை கெடுத்து உயிருக்கே உலை வைப்பது நோய். நோய் சிறியதானாலும் பெரியதானாலும் படுத்துகிற பாடு ஒன்றுதான் எனவேதான் அருமருந்தான வாக்கியத்தை சொல்லி இருக்கிறார் நமது ஔவை பாட்டியார்.

நோய்களை நெருங்க விடாமல் உடலினை உறுதி செய்வோம். பயமின்றி நலமாக வாழ்வோம்.

தொடரும்...

அருள் உலா
திருமுறைத் திருத்தல யாத்திரை
திருகருவிலிக்கொட்டிடை

- கயிலைத்திருவடி 'யுவதூத்'

Dr. **என். சந்திரசேகர்,** M.A., B.Ed., Ph.D., சேலம், தமிழ்நாடு

வாடி நீர் வருந்தாதே மனிதர்காள்
வேடனாய விஜயற்கருள் செய்தவெண்
காடனாருறை கின்ற கருவிலிக்
கோடு நீற்பொழில் கோட்டிடை சேர்மினே

- ஸ்ரீ நாவுக்கரசு ஸ்வாமிகள் அருளிய
5-ஆம் திருமுறைப் பாடல்

காவிரி தென்கரைத் தேவார பாடல் பெற்ற தலங்களுள் 63-ஆவது திருத்தலம் திரு கருவிலிக் கொட்டிடையாகும். இத்தலம் தற்போது மக்கள் வழக்கில் கருவேலி என்று அழைக்கப்படுகிறது. பிறவாப் பெருநிலையாகிய மோக்ஷ சாம்ராஜ்யம் அருளும் இப்புனிதத் தலம் சற்குணேஷ்வரபுரம் எனவும் சிறப்பிக்கப்படுகின்றது.

அருள் வரலாறு :

அன்னை ஆதிசக்தி அம்பிகையே ஒரு கெட்டவனுக்கு மகளாகப் பிறந்ததால் மறுபிறவி எடுத்து மீண்டும் ஈசனை அடைந்து பிறவாப் பெருநிலை பெற்றார். அதுபோல இத்தலத்து ஈசனை தரிசித்து வணங்குபவர்களுக்கு இனி பிறவி கிடையாது, மீண்டும் கருவறை வாசம் இல்லை என்று தல வரலாறு கூறுகிறது.

சதிதேவியாக :

பிரம்மதேவரின் மானஸ புத்திரர்களில் ஒருவனான தக்ஷ ப்ரஜாபதி ஸ்ரீ சிவபெருமானை வேண்டு அன்னை ஆதிசக்தியையே மகளாகக் கேட்டான். சிவனருளால் அன்னையும் தக்ஷனுக்கு சதிதேவி, தாக்ஷாயனி முதலான திருநாமங்களுடன் மகளாக அவதரித்து ஸ்ரீ சிவபெருமானை மணந்தார்.

ஸ்ரீ சிவனருளால் எல்லையில்லா ஆற்றல் பெற்ற தக்ஷன் அந்த சிவனையே அவமதிக்கும் வண்ணம் அவரை மட்டும அழைக்காமல் ஒரு பெரிய யாகம் செய்தான்.

சிவபெருமான் எவ்வளவோ தடுத்தும் கேளாமல் சதிதேவி தன் தந்தையின் யாக சாலை வந்தார். அழையா விருந்தாளியான் தாக்ஷாயினியை தக்ஷன் அவமதித்தான். இதனால் மனம் நொந்த சதிதேவி யாகத்தீயில் புகுந்து உயிர் நீத்தார்.

செய்தியறிந்த சிவனார் யாக சாலை வந்தார். வீரபத்ரர் மூலம் தவறிழைத்தவரை தண்டித்தார். சதிதேவியைத் தம் தோளில் தாங்கி ஆக்ரோஷமாக நடனமாடினார். அண்ட சராசரங்கள் அதிர்ந்தன, தேவர்கள் நடுங்கினார். எல்லோருமாக ஸ்ரீமஹாவிஷ்ணுவிடம் சென்று சிவனாரின் கோபத்தைக் குறைத்து அருள வேண்டினர்.

அன்னையின் உடல் இருக்கும் வரைதான், அதனைக் காண்பதால் ஐயனின் கோபம் அதிகமாகிறது என்ற காரணத்தால் ஸ்ரீமஹாவிஷ்ணு சதிதேவியின் உடலைத் தமது சுதர்ஸனச் சக்ரத்தால் சிறுசிறு துண்டங்களாக்கி பூமியில் விழச் செய்தார். சிவனாரும் கோபம் தணிந்தார். சதிதேவி அடுத்தபிறவியில் பர்வதராஜன் மகள் பார்வதியாக மீண்டும் அவதரித்து ஸ்ரீ பரமேஷ்வரரை மணந்து பிறவாப் பெருநிலை பெற்றார்.

சதிதேவியின் உடல் பாகங்கள் விழுந்த 51 இடங்கள் ஸ்ரீ சக்தி பீடங்களாக வழிபடப்படுகின்றது.

இவ்வரலாற்றின் அடிப்படையில் பிறவாப் பெருநிறை அருளும் மோக்ஷபுரியாகவும் திரு கருவிலக்கொட்டடை திருத்தலம் திகழ்கின்றது.

சிறப்புக்கள் :

1. இத்தலம் மீண்டும் கருவில் உதிக்காத பிறவாப்பெருநிலை அருள்வதால், கருவிலா நிலை நல்குவதால் கருவிலி எனவும், கருவிற்கு வேலியாக இருந்து ஒருவரை மீண்டும் பிறக்காமல் இருக்கும் பெருநிலை நல்குவதால் கருவேலி எனவும் அழைக்கப்படுகின்றது.
2. இத்திருத்தலம் சோழர் காலத்தில் திருப்பணிகள் செய்விக்கப்பட்ட சிறப்புடையது ஆகும்.
3. கல்வெட்டில் இத்திருத்தலம் ‘‘உய்யகொண்டான் வளநாட்டு வெண்ணாட்டுக் குலோத்துங்கச் சோழ நல்லூராகிய கருவிலிக் கொட்டிடை’’ என்று குறிப்பிடப்பட்டுள்ளது.

4. பிரகாரத்தில் அம்பாளுக்குத் தனிச் சந்நிதி உள்ளது.
5. சற்குணன் என்ற மன்னன் இத்தலத்து ஈசனை வழிபட்டு பிறவாப் பெருநிலை, மோக்ஷமடைந்தான். ஆகையால் இந்த திருத்தலம் சற்குணேஷ்வரபுரம் என்றும் அழைக்கப்படுவதாகத் தலவரலாறு விவரிக்கின்றது.
6. மார்கண்டேயர் உயிர்பறித்த எமனை ஈசன் தண்டித்தார். அதற்கு ப்ராயச்சித்தமாக பல சிவத்தலங்கள் சென்று எமதர்மன் ஸ்ரீ சிவபெருமானை வழிபட்டான். அவ்வாறு எமன் வழிபட்ட சிவத்தலங்களுள் இதுவும் ஒன்று.
7. இத்தலத்து ஈசனை வணங்க தீய குணங்கள் மறையும், நற்குணங்கள் தொடரும் என்பது அனுபவம்.

ஸ்ரீ ஸ்வாமி - ஸ்ரீ அம்பாள் :

இறைவன்	: ஸ்ரீ சற்குணேஷ்வரர்
இறைவி	: ஸ்ரீ சர்வாங்க நாயகி
தலமரம்	: வில்வமரம்
தீர்த்தம்	: யம தீர்த்தம்
வழிபட்டு அருள் பெற்றோர்	: எமன், சற்குணன் முதலானோர்.

அருட்பதிகங்கள் :

ஸ்ரீ நாவுக்கரவு ஸ்வாமிகள் இத்தலத்து ஈசனை பாமாலை சூட்டி மகிழ்ந்துள்ளார்.

தரிசன காலம் :

காலை 07.00 மணி - பகல் 01.00 மணி வரை
மாலை 04.00 மணி - இரவு 08.00 மணி வரை

தொடர்பு முகவரி :

ஸ்ரீ சற்குணேஷ்பரர் திருக்கோயில்,
கருவேலி (சற்குணேஷ்வரபுரம்) - 605 501.
திருவாரூர் மாவட்டம்.

தொடர்புத் தொலைபேசி எண் :

9442932942 / 04366-273900

அமைவிடம் :

தற்போது கருவேலி என்றும், சற்குணேஷ்வரபுரம் என்றும் அழைக்கப்படும் திரு கருவிலிக்கொட்டிடை திருத்தலமானது

மயிலாடுதுறை-திருவாரூர் சாலையில் உள்ள பூந்தோட்டத்திலிருந்து நாச்சியார் கோயில் செல்லும் பாதையில் கூந்தலூருக்கு அருகே அமைந்துள்ளது.

ஸ்ரீ சர்வாங்க நாயகி ஸமேத
ஸ்ரீ சற்குணேஷ்வர பரப்ரஹ்மணே நம:

... அருள் உலா தொடர்கிறது.

Scan this QR code to follow
SHABARI BOOK SALES, SALEM
WHATSAPP CHANNEL

Scan this QR code to follow
SHABARI SIKSHA SANSTHAN, SALEM
WHATSAPP CHANNEL

இணைந்திடுங்கள்...
இணைத்திடுங்கள்
இதயங்களை...

அன்பார்ந்த வாசகர்களே,

உள்ளத்தையும் எண்ணத்தையும் உயர்த்தும் படைப்புகளுடன் ஹிந்தி, தமிழ், சமஸ்கிருதம் ஆகிய மும்மொழிகளில் வருகிறது சபரி சிக்ஷா சமாச்சார் பத்திரிக்கை. ஆண்டுச் சந்தா ₹100/- செலுத்தி இந்த இலக்கியப் பயணத்தில் நீங்களும் இணையலாம். நண்பர்களுக்கும், உறவினர்களுக்கும், மாணவர்களுக்கும் இந்த நல்ல பத்திரிக்கையை பரிசளியுங்கள்.

Send MONEY ORDER or DD to
SHABARI SIKSHA SANSTHAN,
194, 2nd Agraharam, SALEM-636001. TN
PHONE : 9842765414

SHABARI SIKSHA SAMACHAR, SALEM

Form IV (See Rule 8)

Statement about ownership and other particulars about Shabari Siksha Samachar (according to Form IV. Rule 8 circulated by the Registrar of Newspaper for India).

1.	Place of Publication	:	Salem - 636 001
2.	Periodicity of its Publication	:	Monthly
3.	Printer's Name	:	D. Sivakumar
	Nationality	:	Indian
	Address	:	Sivamurthy Press, 35, A.P. Koil Street, Salem - 636 001.
4.	Publisher's Name	:	M. Sridhar
	Nationality	:	Indian
	Address	:	37, First Agraharam, Salem - 636 001.
5.	Editor's Name	:	M. Venkateswaran
	Nationality	:	Indian
	Address	:	197, Second Agraharam, Salem - 636 001.
6.	Name & Address of the individuals who own the newspaper and partners or shareholders holding more than 1 % of the capital	:	M. Sridhar Owner & Publisher 37, First Agraharam, Salem - 636 001.

I, M. Sridhar, hereby declare the particulars given above are true to the best of my knowledge and belief.

Sd.

Date : 05.07.2026. **M. Sridhar**

Signature of the Publisher

शबरी परिवार से एक और भेंट

अक्षया हिन्दी पाठ्यपुस्तक

बाल कक्षाओं से पाँचवीं कक्षा तक के छात्रों के लिए

आज ही खरीदें...
Get your copies now...

- ❖ मन भावन शैली
- ❖ सामाजिक मूल्यों पर आधारित
- ❖ सरल और ज्ञानवर्धक अभ्यास
- ❖ भाषा कौशल पर आधारित
- ❖ सृजन तथा चिंतना शक्तिवर्धक
- ❖ सरल तथा शुद्ध भाषा
- ❖ छात्रों में रुचि उत्पादक
- ❖ अभिभावक का प्रिय पुस्तक
- ❖ श्रेष्ठ अध्यापक का मन मोह पुस्तक

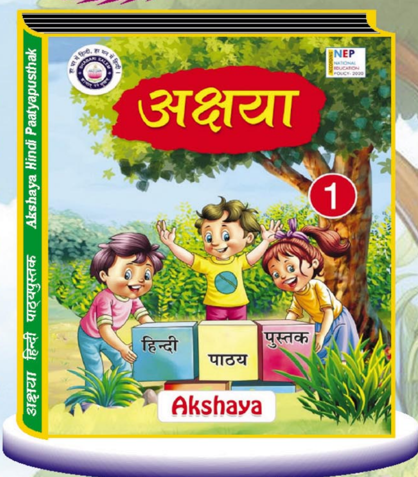

Shabari Book House proudly presents

Akshaya Hindi Paatyapusthak

a new series of Hindi third language books that inspire the learner

- ✦ Captivating storytelling
- ✦ Value-driven lessons
- ✦ Engaging book exercises
- ✦ Enhanced language proficiency
- ✦ Boosts creativity & critical thinking
- ✦ Lucid, effective language
- ✦ Sparks student curiosity
- ✦ Parent-friendly content
- ✦ The best teachers' Choice

Price

LKG	₹ 90/-
UKG	₹ 100/-
Std-1	₹ 150/-
Std-2	₹ 150/-
Std-3	₹ 150/-
Std-4	₹ 150/-
Std-5	₹ 150/-

SHABARI BOOK HOUSE
"Shabari Palace"
194, Second Agraharam,
Salem - 636 001.
Whatsapp : 94431-65414
Phone : 94433-65414,
98427-65414
Visit us at https://books.shabari.org/

Posted at Salem HPO 636 001. July-2026

Published on 5th July-2026

Posted on 6th & 7th of every month. R.N.I. No. : TNMUL/1999/00402
Postal Reg. No. : TN/WR/SLM(E)/121/2024-2026
Licenced to post without prepayment. TN/WR/SLM(E)/121/WPP/2024-2026

कृपया सभी पत्र व्यवहार में अपनी सदस्यता संख्या का अवश्य उल्लेख करें ।
அனைத்து கடித போக்குவரத்துகளிலும் தங்களுடைய உறுப்பினர் எண்ணை தவறாமல் குறிப்பிடவும்.
Please quote your subscription number in all correspondences.

If undelivered please return to
Shabari Siksha Samachar,
A.O. 194, Second Agraharam, Salem - 636 001.

To

DON'T TEAR THE LABEL IF UNDELIVERED

Trilingual Dictionary

Shabari Shabdha Saagar

Just ₹ 1000.00

1632 Pages

51,000 Words

ஹிந்தி
ஹிந்தி
ஆங்கிலம்
தமிழ்
அகராதி

தமக்காக ஒன்று !
பிறர்க்கு பரிசளிக்க
மிகவும் நன்று !!

கற்போர் கற்பிப்போரின்
சொல் வளம் பெருகிட
ஹிந்தியோடு தமிழும் ஆங்கிலமும்
தங்களின் நுனி விரலில் தவழ்ந்திட
51,000 சொற்களின் அணிவகுப்பு
சபரியின் தரமானதோர் படைப்பு

வாழ்க்கை பயனுற வானம் வசப்பட...
வார்த்தைகளால் வளம் பெற்று சிறந்திட...

SHABARI BOOK HOUSE

"Shabari Palace", 194, Second Agraharam, Salem - 636 001.
Whatsapp : 94431-65414
Phone : 94433-65414, 98427-65414
Visit us at https://books.shabari.org/